नवनीत

ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

अतुल्य भारत!

वसुधैव कुटुम्बकम्
पूरी दुनिया एक ही परिवार है।

Bharatiya Vidya Bhavan AUSTRALIA

www.bhavanaustralia.org

काव्य | साहित्य | शिक्षा | संस्कृति | दर्शन

अप्रैल 2013, अंक 1 नंबर 7 (Vol 1. No. 7) | ISSN 2200 -

शब्द-यात्रा *नवनीत भारत से*

विचरण करते पशु-पक्षी

● आनंद गहलोत

विश्व की अधिकांश भाषाओं में पशुवाची शब्दों का रक्त सम्बंध रहा है- गो (गाय) और अंग्रेज़ी की 'काउ' की तरह. संस्कृत का उक्षन् (बैल) यूरोप में 'ऑक्सेन' हो गया. संस्कृत का 'उष्ट्र' फ़ारसी में 'उश्तुर' हो गया. अरब देश का नाम भी संस्कृत की देन है.

पक्षी तो उड़कर कहीं भी चले जाते हैं; लेकिन शब्द उड़कर नहीं जाते. वे धीरे-धीरे चल कर जाते हैं. उनकी गति प्राचीन काल में मनुष्यों के आवागमन, एक-दूसरे के साहचर्य, नज़दीक आने या टकराव की गति से तेज़ नहीं थी. आज शब्दों की यात्रा की गति-संचार-साधनों की गति के बराबर है.

मानव जाति के आदि पूर्वजों की पशुओं में सबसे ज़्यादा आत्मीयता, लगाव 'गो' (गाय), 'उक्षन' (बैल), अश्व (घोड़ा) और उष्ट्र (ऊंट) के साथ थी. कुछ देशों में हाथी के साथ भी. भेड़-बकरियां भी उसके लिए उपयोगी थीं.

विश्व की ज़्यादातर भाषाओं में पशुवाची अधिकांश शब्दों का स्रोत भी समान है.

विश्व की ज्ञात आदि भाषा में 'गाय' के लिए 'गो' शब्द था. भारत में ही नहीं, एशिया, यूरोप, देश-देशांतरों की विभिन्न भाषाओं में इस शब्द में मामूली रूप-ध्वनि परिवर्तन हुआ. ईरान में 'गो' का 'गाव' हो गया. भारत में प्राचीनतम भाषा के बाद की संस्कृत भाषा में 'गो' शब्द अपने मूल रूप में बना रहा लेकिन उसके बाद की पालि और प्राकृत भाषा में 'गावी' हो गया. आज हिंदी, मराठी, गुजराती आदि में 'गाय' है.

यूरोप की प्राचीन भाषाओं में इस शब्द में काफ़ी ध्वनि परिवर्तन हुआ था; लेकिन आज की अंग्रेज़ी में 'गाय' के लिए 'काउ' शब्द है. 'ग' और 'क' का आपसी बदलाव 'काक' (कौआ) और 'काग' (कौआ) में देखा जा सकता है.

भारतीय 'गाय' को सीधा-सादा पशु मानते हैं; लेकिन यूरोपीय भीरू डरपोक मानते हैं. उन्होंने डरपोक के लिए 'काउ' से 'काउअर्ड' शब्द गढ़ा.

'बैल' के लिए भारतीय यूरोपीय आदि भाषा का 'उक्षन्' शब्द अब भारत में लोकप्रिय नहीं रहा. उसकी जगह संस्कृत शब्द 'बलीवर्द' के अपभ्रंश 'बैल' ने ले ली है. अलीगढ़ जिले में 'बलीवर्द' का लघु रूप 'बद्द' और मारवाड़ी में 'वलद' 'बैल' के सजातीय शब्द हैं. ईरानी भाषाओं ने बैल के लिए गाय- वाची शब्द 'गाव' से ही काम चला लिया. गाव के आगे सिर्फ़ 'नर' (पुरुष) जोड़कर 'नरगाव' बना दिया. यूरोपीय भाषाओं ने इस प्राचीनतम शब्द की शुद्धता को बरकरार रखा और 'उक्षन्' (बैल) को 'ऑक्सेन' रूप में.

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अप्रैल 2013

कुलपति उवाच

तितिक्षा बंधन-मुक्ति का नाम है

राग, भय और क्रोध, यह केंद्र-विमुख शक्तियां हैं और चित्त को कर्म से चिपटने न देकर इधर-उधर खींच ले जाती हैं. स्वभाव की जो सहज शक्तियां हैं, वे केंद्रविमुख हैं. ध्यान इन शक्तियों को सर्जन शक्ति के तनतनाते किसी केंद्र में एकाग्र करता है. ईश्वर प्रणिधान अर्थात समर्पण, कर्म और उसके फल के बीच की कड़ी का परिवर्तन एक नये प्रकार की ग्रंथि में करता है. यह ग्रंथि, कर्म करने की प्रकृति को जागृत करती है.

इस साधना का सबसे मूल्यवान अंग तितिक्षा है. श्रीकृष्ण अर्जुन को तितिक्षा सम्पादित करने के लिए कहते हैं. इस आदेश का सार उन्होंने दो श्लोकों में दिया है. पहला है- हे कुंतीपुत्र, सर्दी-गर्मी और सुख-दुख देनेवाले ये इंद्रिय और विषयों के संयोग क्षणभंगुर और अनित्य हैं- आते हैं, जाते हैं. हे भारत, तू इनको सहन कर. और दूसरे श्लोक में कहा गया है- सुख-दुख को समान समझने वाले जिस धीर पुरुष को इंद्रियों के विषय व्याकुल नहीं कर सकते वह मोक्ष पाने के योग्य हो जाता है. प्रतिकार, चिंता या विलाप किये बिना दुखों को सहन करने का नाम तितिक्षा है. और सुख-दुख मान-अपमान, जय-पराजय आदि द्वंद्वों से परे होना तितिक्षा का हेतु है. मन के द्वंद्वों के बंधन से मुक्त करने की साधना ही तितिक्षा प्रदान करती है.

(कुलपति के. एम. मुनशी भारतीय विद्या भवन के संस्थापक थे)

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, अप्रैल 2013

अनज़ेक दिवस

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में प्रतिवर्ष 25 अप्रैल को, प्रथम विश्व महायुद्ध के दौरान 25 अप्रैल 1915 को ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के सैनिकों के तुर्की के गलीपोली तट पर उतरने की स्मृति में, अनज़ेक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पश्चिमी राष्ट्रों की सयुंक्त सेनाओं के नेतृत्व में हुए तुर्की सेना के साथ भीषण युद्ध में भारी संख्या में सैनिक हताहत हुए और वीरगति को प्राप्त हुए थे। ऑस्ट्रेलिया के 8709 सैनिक शहीद हुए 19441 सैनिक घायल हुए।

इन सभी शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में सभी राज्यों की राजधानियों और मुख्य नगरों में समारोहों का आयोजन किया जाता है और सैनिकों के त्याग और जीवन बलिदान के प्रति संवेदनाएं प्रगट की जाती हैं।

सारे ऑस्ट्रेलिया में हुए समारोहों के साथ-साथ, प्रतिवर्ष मुख्य समारोह तुर्की के गलीपोली तट स्थल पर ही आयोजित किया जाता है- जिसमें भाग लेने के लिए, भारी संख्यां में वर्तमान और भूतपूर्व सैनिक और उनके परिवार ऑस्ट्रेलिया से तुर्की जाते हैं।

इन सब समारोहों और आयोजनों के बीच हमारा ध्यान तुर्की ओर से निर्मित एवं स्थापित शिलालेख में उक्त की गयी पंक्तियों की ओर आकर्षित होता है। शिलालेख में व्यक्त की गयी भावनाएँ सभी के हृदयों को छू लेती हैं जो इस प्रकार हैं-

“उन वीरों की स्मृति में, जिन्होंने अपना खून बहाया और जीवन बलिदान किया—और अब एक मित्र देश की मिट्टी में लेटे हुएँ हैं।

“जो सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए—चाहे वह विदेशी थे या तुर्की के थे—लेकिन यहाँ हमारे देश में साथ साथ लेटे हुएं हैं—हमारे लिए कोई अंतर नहीं है।

“माताओं—अपने पुत्रों को यहाँ भेजने पर आये आँसुओं की पूछो—क्योंकि वो अब यहाँ पर हमारे हृदय में शांतिपूर्वक विराजमान हैं। इस भूमि पर बलिदान करने से वो भी अब हमारे पुत्र समान हो गए हैं।”

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया उन सभी सैनिकों की स्मृति और त्याग के प्रति श्रद्धांजलि और संवेदना प्रगट करता है।

शुभ कामनाओं सहित

कृष्ण कुमार गुप्ता

कृष्ण कुमार गुप्ता, संपादक

भारतीय राष्ट्र गान

जन गण मन

अधिनायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंगा

विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधि तरंगा

तव शुभ नामे जागे

तव शुभ आशीष मांगे

गाहे तव जयगाथा

जन गण मंगलदायक जय हे

भारत भाग्यविधाता

जय हे, जय हे, जय हे

जय जय जय जय हे!

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः
महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो

-ऋग्वेद 1-89-1

विषय-सूची

रात और दिन की आंख-मिचोली 8
अशोक चक्रधर जी का ब्लॉग—चौं रे चम्पू 9
ऐसा सोचा खुरपेंची दिमाग़ ने 9
अन्तिम प्यार 11
International Centre of Nonviolence Australia Post Launch Report 12
Celebrations of Bhavan's Holi Mahotsav 2013: A Report 16
मैं तो बहुत दिनों पर चेता। 21
दोनों ओर प्रेम पलता है 22
संत कबीरदास दोहावली 23
शून्य से टकरा कर सुकुमार 25
श्री गुरु ग्रंथ साहिब से 27
नाम-रूप का भेद 30
पंख 31
मकान 32
नील कण्ठ तो मै नही हूँ 33
यह है भारत देश हमारा 34
ग़ज़ल 35
उसकी महक 36
तुलसी दास के दोहे 39
रे मन मूरख, जनम गँवायौ 41
एक चिनगारी घर को जला देती है 42
एक जीवी, एक रत्नी, एक सपना 44
बोधकथा 48
लेखक का बदला 48
बच्चों का कोना 49
अच्छे काम का पुरस्कार 49

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया निर्देशक मंडल

पदाधिकारी:

अध्यक्ष	सुरेन्द्रलाल मेहता
कार्यकारी सचिव	होमी नव्रोजी दस्तूर
प्रधान	शंकर धर
सचिव	श्रीधर कुमार कोंदेपुदी

अन्य निर्देशक:

श्रीनिवासन वेंकटरमन, पल्लादम नारायणा सथानागोपाल, कल्पना श्रीराम, जगन्नाथन वीराराघवन, मोक्षा वत्स, कृष्ण कुमार गुप्ता

अध्यक्ष: गंभीर वत्स

संरक्षक: महामहिम श्रीमती सुजाता सिंह (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम प्रहत शुक्ला (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त), महामहिम राजेंद्र सिंह राठौड़ (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत उच्चायुक्त)

मानद जीवन संरक्षक: महामहिम एम. गणपथी (ऑस्ट्रेलिया में पूर्व भारत कौंसुल जनरल और भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया के संस्थापक)

प्रकाशक व प्रबंध संपादक:
गंभीर वत्स
president@bhavanaustralia.org

संपादकीय वर्ग: कृष्ण कुमार गुप्ता (संपादक); परवीन दहिया (भाषा संपादक); शबाना बेगम (सहयोग)

विज्ञापन हेतु:
pr@bhavanaustralia.org
Bharatiya Vidya Bhavan Australia
Suite 100 / 515 Kent Street,
Sydney NSW 2000

यह जरुरी नहीं है कि नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में योगदानकर्ताओं के विचार, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट या संपादक के विचार हों। नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट किसी भी योगदान लेख और प्रस्तुत पत्र को संपादित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। *कॉपीराइट:* प्रस्तुत सभी विज्ञापन और मूल संपादकीय सामग्री भवन ऑस्ट्रेलिया की संपत्ति है और इन्हें कॉपीराइट के मालिक की लिखित अनुमति बिना पुन: पेश नहीं किया जा सकता।

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट: Vol. 1 No. 7, ISSN 2200 - 7644

Australian National Anthem

Australians all let us rejoice,
For we are young and free;

We've golden soil and wealth for toil;
Our home is girt by sea;

Our land abounds in nature's gifts
Of beauty rich and rare;

In history's page, let every stage
Advance Australia Fair.

In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.

Beneath our radiant Southern Cross
We'll toil with hearts and hands;

To make this Commonwealth of ours
Renowned of all the lands;

For those who've come across the seas
We've boundless plains to share;

With courage let us all combine
To Advance Australia Fair.

In joyful strains then let us sing,
Advance Australia Fair.

रात और दिन की आंख-मिचोली

(सारे खेल जीते-जी ही देखे जा सकते हैं)

मुस्कानों की मीठी यादें,
बहते आंसू की फ़रियादें।
प्यार मुहब्बत, हंसना रोना,
सज़ा मज़ा, पा जाना खोना।
महल दुमहले, बंगले कोठी,
चना-चबैना, सूखी रोटी।
क्या रोटी पर देसी घी है?
जो कुछ भी है
जीते जी है!!

गहने-ज़ेवर की संदूकें,
संदूकों में हैं बंदूकें।
बंदूकों में छर्रे-गोली,
गोली में है ख़ूं की होली।
होली खेलें बीच बजरिया,
सबकी उसने लिखी उमरिया।
क्या तुमको काफ़ी भेजी है?
जो कुछ भी है
जीते जी है!!

झूले चर्खी, मेला ठेला,
झुमके ठुमके, कुश्ती
खेला।
खेल-खिलौने, खील-
बताशे,
जोकर के रंगीन तमाशे।
छीनाझपटी, मारामारी,
घोड़ा-तांगा, रेल सवारी।
क्या मन के माफ़िक तेज़ी है?
जो कुछ भी है
जीते जी है!!

क़ुदरत के भरपूर नज़ारे,
प्यारे सूरज, चंदा, तारे।
रात और दिन की आंख-मिचोली,
सैंया, गलबहियां, हमजोली।
ख़ूब महकती थी फुलवारी,
लेकिन भैया, जान हमारी,
वक़्त से पहले क्यों ले ली है?
जो कुछ भी है
जीते जी है!!

—अशोक चक्रधर

अशोक चक्रधर जी का ब्लॉग—*चौं रे चम्पू*

ऐसा सोचा खुरपेंची दिमाग़ ने

—चौं रे चम्पू! तेरे खुरपैंची दिमाग नैं कौन सी गल्त बात देखी पिछले दिनन में?

—चचा, ग़लत बातों के अम्बार हमारे चारों तरफ हैं। हां, तुमने खुरपैंची दिमाग़ कह कर मेरा सम्मान बढ़ाया, उसके लिए शुक्रिया। ये दिमाग किसी एक मुद्दे पर अटक जाय तो वातावरण में प्रदूषण की तरह चारों ओर मंडराने लगता है। शिमला गया था एक कविसम्मेलन के लिए। स्वच्छ पर्यावरण! हरीतिमा देखकर बड़ा सुकून मिला। ऊपर मौसम की गुलाबी ठण्डक ने धन्य कर दिया। और जब उस ठण्डे वातावरण से नीचे कालका तक आए तो फिर से लगी गर्मी। शताब्दी में बैठे तो पुन: तरावट में आ गए। जब शताब्दी दिल्ली पहुंचने वाली थी तो एक उद्घोषणा सुनकर फिर से दिमाग़ में गर्मी चढ़ने लगी।

—का भयौ जे बता!

—चचा, उद्घोषणा थी कि दिल्ली में आपका स्वागत है और यात्रियों से अनुरोध है कि वे अपनी पानी की बोतल या तो अपने साथ ले जाएं अथवा उसे नष्ट कर दें, ताकि दुरुपयोग न हो सके, धन्यवाद। और मेरा खुरपैंची दिमाग़, जैसा कि तुमने कहा, अलाय-बलाय सोचने लगा।

—का सोची तैनैं?

—सोचने ये लगा कि जब पूरा संसार प्लास्टिक से लड़ रहा है तो पानी की बोतल आधी भरी भी रह गई तो पानी महत्वपूर्ण है या बोतल का अपने साथ ले जा कर कहीं भी फेंक देना! मनुष्यता के लिए हानिकारक क्या है। जितने लोग पानी की बोतल अपने साथ ले जाएंगे, ऑटो में, टैक्सी में, कार में बैठेंगे, पानी समाप्त करेंगे और सड़क पर बोतल फेंक देंगे। वह लुढ़कती हुई मनुष्यता के किस गर्भ में जाकर कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन करेगी, क्या पता। प्लास्टिक जैसी चीज़ जो मनुष्यता के लिए हानिकारक है, वह यदि डिब्बे में ही छोड़ दी जाए तो उसको समेटकर, सही स्थानपर पहुंचाने में रेलवे विभाग को सुविधा होती, लेकिन नहीं! वे तो संदेह करते हैं, अपने ही लोगों पर! बोतल का दुरुपयोग होगा। अब दुरुपयोग क्या हो सकते हैं मैंने सोचना शुरू किया।

—का सोची तैनैं?

— एक दुरुपयोग तो ये हो सकता है कि रेलवे सुरक्षा पुलिस की नाक के नीचे चोर आएंगे और वे बोतल चुराकर ले जाएंगे। बोतल बिना किसी प्लांट में गए, गटर के अथवा ज़मीन के पानी से भरकर पुन: डिब्बे में प्लांट कर दी जाएगी! अर्थात, रेलवे की सुरक्षा पुलिस पर रेलवे को भरोसा नहीं है। अरे, बोतल कोई कान का झुमका तो है नहीं कि कोई जेब में डालकर ले जाएगा। सत्तर यात्रियों के डिब्बे से कोई सत्तर बोतल निकालकर ले जाएगा तो किसी की नज़र में न आए, ऐसा हो ही नहीं सकता। फिर हर डिब्बे में एक अटैंडेंट होता है। या तो वह स्वयं चोर है या चोरों का मददगार है। यानी, रेलवे को अपने स्टाफ़ पर ही भरोसा नहीं है। दूसरी बात यह कि अगर बोतल नष्ट कर भी दी जाए तो क्या उससे प्लास्टिक नष्ट हो जाती है? तीसरी बात, बोतल नष्ट करने के बाद कबाड़ियों के पास जाती हैं और वह भी बिना चोरी के नहीं जा सकतीं। यात्री अगर उसे नष्ट भी करेगा तो भी दुरुपयोग रुक जाएगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। निरीह यात्री को एक ऐसे निरर्थक काम पर लगा दिया जिससे अहित ज़्यादा हो रहा है। बोतल नष्ट करने के लिए कोई हथौड़ा तो लेकर आता नहीं है। मैंने देखा कि एक आदरणीया जब बोतल की गर्दन मरोड़ने लगीं, उनकी चार चूड़ियां टूट गईं। अच्छीखासी सधवा थीं, चूड़ियां टूटने से खीझ गईं। विदेशों की तरह यात्रियों का छोटी-मोटी चोटों के लिए कोई बीमा तो होता नहीं है। चौथी बात, प्लास्टिक ऐसी अजर-अमर वस्तु बनाई है इंसान ने जो इंसानियत के लिए भयंकर हानिकारक है, यह सब जानते हैं। थैलों के मामले में तो जागरूकता आ गई है, लेकिन बोतल अभी भी पर्यावरण के लिए चुनौती बनी हुई है। रेलवे को अपने ईमानदार कर्मचारियों पर भरोसा होना चाहिए कि छोड़ी गई पानी की बोतल को वे यथास्थान पहुंचाएंगे। निरीह यात्री को एक दुष्कर कर्म सौंपने के स्थान पर रेलवे को आत्मचिंतन करना चाहिए। ऐसा सोचा मेरे खुरपेंची दिमाग़ ने। ग़लत सोचा क्या?

—अशोक चक्रधर, उपाध्यक्ष, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार एवं उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, यूट्यूब पर 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान' के बारे में इस लिंक पर जाएं:
http://www.youtube.com/watch?v=BIK4lk_XiJM

अन्तिम प्यार

आर्ट स्कूल के प्रोफेसर मनमोहन बाबू घर पर बैठे मित्रों के साथ मनोरंजन कर रहे थे, ठीक उसी समय योगेश बाबू ने कमरे में प्रवेश किया।

योगेश बाबू अच्छे चित्रकार थे, उन्होंने अभी थोड़े समय पूर्व ही स्कूल छोड़ा था। उन्हें देखकर एक व्यक्ति ने कहा—योगेश बाबू! नरेन्द्र क्या कहता है, आपने सुना कुछ?

योगेश बाबू ने आराम-कुर्सी पर बैठकर पहले तो एक लम्बी सांस ली, पश्चात् बोले—क्या कहता है?

नरेन्द्र कहता है—बंग-प्रान्त में उसकी कोटि का कोई भी चित्रकार इस समय नहीं है।

ठीक है, अभी कल का छोकरा है न। हम लोग तो जैसे आज तक घास छीलते रहे हैं। झुंझलाकर योगेश बाबू ने कहा।

जो लड़का बातें कर रहा था, उसने कहा—केवल यही नहीं, नरेन्द्र आपको भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखता।

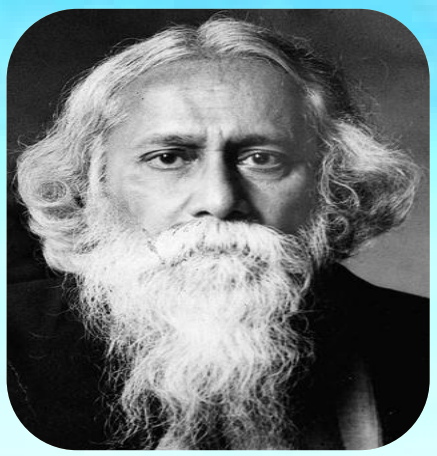

योगेश बाबू ने उपेक्षित भाव से कहा—क्यों, कोई अपराध!

वह कहता है आप आदर्श का ध्यान रखकर चित्र नहीं बनाते।

तो किस दृष्टिकोण से बनाता हूं?

दृष्टिकोण...?

रुपये के लिए।

योगेश ने एक आंख बन्द करके कहा—व्यर्थ! फिर आवेश में कान के पास से अपने अस्त-व्यस्त बालों को ठीक कर बहुत देर तक मौन बैठा रहा। चीन का जो सबसे बड़ा चित्रकार हुआ है उसके बाल भी बहुत बड़े थे। यही कारण था कि योगेश ने भी स्वभाव-विरुद्ध सिर पर लम्बे-लम्बे बाल रखे हुए थे। ये बाल उसके मुख पर बिल्कुल नहीं भाते थे। क्योंकि बचपन में एक बार चेचक के आक्रमण से उनके प्राण तो बच गये थे। किन्तु मुख बहुत कुरूप हो गया था। एक तो स्याम-वर्ण, दूसरे चेचक के दाग। चेहरा देखकर सहसा यही जान पड़ता था, मानो किसी ने बन्दूक में छर्रे भरकर लिबलिबी दाब दी हो। *(जारी ...)*

नोबेल पुरस्कार प्राप्त कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य, शिक्षा, संगीत, कला, रंगमंच और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया। अपने मानवतावादी दृष्टिकोण के कारण वह सही मायनों में विश्वकवि थे। टैगोर दुनिया के संभवत: एकमात्र ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं को दो देशों ने अपना राष्ट्रगान बनाया। बचपन से कुशाग्र बुद्धि के रवींद्रनाथ ने देश और विदेशी साहित्य, दर्शन, संस्कृति आदि को अपने अंदर समाहित कर लिया था और वह मानवता को विशेष महत्व देते थे। इसकी झलक उनकी रचनाओं में भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है। साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने अपूर्व योगदान दिया और उनकी रचना गीतांजलि के लिए उन्हें साहित्य के नोबल पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। गुरुदेव सही मायनों में विश्वकवि होने की पूरी योग्यता रखते हैं।

International Centre of Nonviolence Australia

Post Launch Report

Inspired by and with the support of Ela Gandhi, Gandhi Development Trust and ICON (International Centre of Nonviolence) Durban, we formally launched the International Centre of Nonviolence (ICON) Australia on 27 February 2013 at the New South Wales Parliament House in presence of Federal and State Ministers, diplomats and a host of academic, community and religious luminaries.

Ela Gandhi graciously agreed to come from South Africa for the launch and visited a number of schools and institutions in Melbourne and Sydney over 6 days and was engaged extensively with the Media ABC TV and Radio, SBS and a number of community Radios and TVs.

The schools, institutions and workshops included: Ashbury Primary School and Fort Street High School and Workshops at Parliament House conducted by Sylvania High School and Parliament House conducted by Kingsgrove North High School. Schools program and workshops organised by Dr Phil Lambert PSM, Sydney Regional Director with the Department of Education and Communities.

Events for Ela Gandhi organized by ICON Australia

Melbourne Program for 24 & 25 February 2013

Ela Gandhi's visits to Collingwood Children's Farm; Hanover Crisis Accommodation Centre, University of Melbourne Early Learning Center and Women's Domestic Violence Centre Lecture at the Australia India Institute: ***If Gandhi were alive today?*** Full Speech appears elsewhere in this Magazine.

Public Lecture for 26 February 2013

Lecture at University of New South Wales by Ela Gandhi: ***Building a culture of non-violence: the legacy of Mahatma Gandhi.*** Full Speech appears elsewhere in this Magazine.

Lecture for 28 February 2013

Lecture at Olympic Park organised by Soka Gakkai International by Ela Gandhi***: Human Security and Sustainability.*** This had been organised Greg Johns, General Director, Soka Gakkai International Australia at their Cultural Centre at the Sydney Olympic Park**.** Full Speech appears elsewhere in this Magazine.

Speeches at the Launch on 27 February 2013 in Parliament House of New South Wales

Hon. Victor Dominello (New South Wales Minister for Citizenship and Communities, and Minister for Aboriginal Affairs)

We are in the presence of humanities royalty here tonight; Ela Gandhi is a true successor to the mentor of her grandfather, Mahatma Gandhi. And we are very privileged to have her here today for the launch. This is an important organisation in our State, the International Centre of Nonviolence Australia, ICON. Any organisation inspired by a member of the Gandhi family should be one worthy of support. And when the organisation's goal is to promote nonviolence in our lives, it cannot be ignored.

My support goes automatically to groups who are reaching out across ethnic boundaries to combine their individual strengths. While Gambhir Watts and the Bhavan Australia are setting out to do, the International Centre of Nonviolence will bring together some key leaders from our diverse range of backgrounds to promote this wonderful ideal of nonviolence. I think this Centre can send a very powerful message to the world because we have in this state an almost incredible diversity of race, of faith, of language in our communities, yet we live in harmony. If we can exploit that harmony to promote lives of nonviolence we will have something to show to the rest of the world, where for sure there is way too much violence. And I congratulate you again for this outstanding initiative and when I look in front of me and I see students here and I've heard what the MC said in relation to education. Particularly in my travels as a Minister of Citizenship and Communities I realise how important it is in that educational framework to make sure the message beyond that, the culture of nonviolence is taught. If we don't get that right at the educational level then it's far harder later on to bring the genie back into the bottle. So I really encourage it because this is going to be a movement, a lighthouse, for where the world needs to be if we want to truly get to that enlightened stage.

Senator Lisa Singh (Federal Government of Australia), Acting Chair of UNICEF Parliamentary Association

I was delighted when Gambhir invited me to be a part of this tonight and I think this is a night that will stay with me for a very long time. To be in the presence of Ela Gandhi is certainly something very special to me.

As someone that grew up with an understanding of the teachings of Mahatma Gandhi, of his values, of his words and I try in my 41 years of life to live out those principles, words and values of him to then have his granddaughter here with us tonight, to be part of this opening of ICON here in Australia is indeed a fantastic and a very auspicious moment in all of our lives. There is also no better way to celebrate Mahatma Gandhi than through the opening of this ICON because here in Australia like anywhere in the world we are not immune to violence. We also have our own share of violence that occurs here in Australia and I think that if we can pick up from what Moksha Watts said it is through education that we can try to change and turn that around. It is through not only the current generation but their children and their children's children that we hope that one day will have a country and a world that is free of violence.

Briefly this week the Four Corners program on the ABC which very much focused on an hour documentary on violence, it look at alcohol feud violence, it looked at violence of young men and for me in my previous political life when I was a member of the Parliament and a Minister in the State Parliament in Tasmania I was landed with a portfolio that perhaps not all Ministers particularly want to put their hands up for and that was the portfolio of corrections, of dealing with our correctional system. And there of course I was landed with how to approach, how we stop the recidivism rate of those violent men who ended up in our prison system coming out and repeating that action and I found myself looking at the values of Mahatma Gandhi and looking at how in some way we can ensure that they come out more peaceful than they've been in in the first place.

Of course I think that the other aspect that Moksha also picked up on is the fact that women are often the more targeted gender, not always, but there are statistics that reveal that women will be more subject to violence, to sexual violence, in their

lifetime and I think that again is something that in Australia we are certainly not immune to.

On behalf of the Australian government it is a complete honour for me to stand here tonight and to welcome to Australia and to be here with you at this opening of ICON which is something that the whole country will benefit from in the future.

Dr Phil Lambert (Regional Director, Sydney Department of Education; Adjunct Associate Professor (University of Sydney); Adjunct Professor (Nanjing University)

What a day it's been. I have to say this will go down as one of the highlights of my career. Before today I think I would have said the two most wonderful women that I spent a day with are my wife and my daughter, I'm going to extend that to three because I had the absolute privilege of spending the day with Ela Gandhi.

From the moment, I actually met her yesterday we talked through the arrangements for today, but met her this morning and talked with her throughout the car trip to Ashbury Public School, one of our fabulous public schools, where we had the most delightful program. It's one of our schools that have been doing some standing work in White Ribbon, combating violence against women and girls and we also have there our Indian Calling Program which opens clearly the eyes of our students, the majority

clearly are not from Indian background joined up by video conferences with six other schools who regularly learn about Indian culture and learn to appreciate and respect India and its culture. Then we had a trip to Fort Street High School, we happened to hear their fabulous band outside, and that was a wonderful program meeting with the senior students there and also a major assembly. Apparently the students at the school, the representative council of the school, ordered the executive of the school that I had to be a whole assembly, there couldn't be a few privileged students to meet Ela. There had to be the full student population and there were so many excited students and the questions were fantastic.

I actually have to say that Miss Gandhi tonight will go to sleep with a big smile on her face; I've never seen paparazzi like I've seen throughout today. There were cameras everywhere, flashing everywhere and she was charming. She accepted every request, every single request. I can tell you my legs are giving away I am going to flop tonight when I get home. She has so much energy I kept asking her if she'd like a little rest that was for me actually. She is a wonderful ambassador, a wonderful woman to hear about her work with Nelson Mandela, with the party, her timing in government and what she's been doing since her commitment. She's an amazing woman.

His Excellency Biren Nanda, High Commissioner of India

Senator Lisa Singh, Gambhir Watts, dear friends I think this a very unique occasion, we are very honoured to have with us here today Ela Gandhiji who has devoted her life to continuing the message, the ideas of Mahatma Gandhi. South Africa was the laboratory in which Gandhiji refined his techniques. In a sense when he left India the nationalists politics in India had begun in 1885 with the founding of the Congress party but the technique that the Congress party and his leaders like Gandhiji's political group used was constitutional they tried to agitate for self-improvement within the institutions of the community department. When Gandhi came to South Africa he was called to South Africa by a prominent member of the Indian community. Gandhiji faced several disabilities and discrimination in South Africa and he began to experiment with his technique of nonviolence and passive resistance. To Gandhiji this was not just something which was a physical manifestation of action; it was nonviolence, so if you faced nonviolence towards your interlocutor and you did not act violently it was not good enough. That is you have to exercise self-control and have love and affection for the person you were dealing with and it was not just nonviolence in action it was nonviolence at heart and that I think is very difficult to achieve which is why when he went back to India and when he let the mass seek this disobedient movement against the government he offered … at the time when it seemed to be doing very well, it seemed to be succeeding because for him the means to the end was very important and for him the adherence to the discipline of nonviolence was very important.

Professor Emeritus Stuart Rees (Professor Emeritus of the University of Sydney, Chair of the Sydney Peace Foundation)

Stuart Rees delivered the theme lecture*: Practicing Non Violence: Gandhi Legacy, International Priorities.* Prof Stuart said that Mahatma Gandhi advocated *ahimsa* – nonviolence – as a way of living and as a law for life and that his principles of nonviolence inspired civil disobedience towards governments and other representations of oppressive authority. Through skills in organizing, through the clarity of his philosophy as expressed in letters, articles and speeches and often through his courage in fasting, Gandhi led by personal example. He lived and breathed the principle later embraced by feminists and others that the personal is the political.

The ideology of nonviolence and the cues for practice are contained in the language of Shelley and Thoreau, of Gandhi and King. They painted pictures of justice and human rights. They knew the ideals of a freedom which would enhance everyone's fulfilment without interfering with others' freedom of expression.

The language of nonviolence is crucial. It conveys people's interest and appreciation, their gratitude and creativity, laughter and love. Such words contrast with the language of violence in politics, in the crafting of economic, defence or security policies and in individuals' behavior, whether in families, in schools, on the streets, in public or private organizations. Such violence is crippling and self-defeating. It has nothing to do with visions of humanity and cues about conflict resolution contained in Gandhi's notion of *ahimsa. (Full speech appears separately elsewhere in the magazine).*

Ela Gandhi

In the last four days she learnt so much in Australia, by visiting so many schools, so many centres and so many wonderful things that are happening in the country and I'm taking back with me a lot of lessons from here. So I'm not sure how many lessons I'm going to bring to you but I can only invite you to come to South Africa, have exchange programs and let's learn from each other because that is the most important thing about ICON.

I want to say that on behalf of Gandhi Development and Trust and ICON South Africa I want to congratulate you on this initiative. Indeed we must work together to build up a rise of awe of knowledge and respectful models so that it can be replicated throughout the world and we can make a difference.

Ela Gandhi giving a brief background to the formation of ICON in South Africa said that inspired by Gandhiji's work in South Africa and his nonviolent movement a group of volunteers began to look at how to address the rising violence in the country and globally. Ela Gandhi said that while the tendency is to look for solutions in a stringent justice system approach we look for solutions in Gandhiji's ideas. Clearly his approach to nonviolence was much broader than the strategy to be used in certain situations.

For Gandhiji nonviolence was a way of life. What end is the composition of this way of life and how can we promote it? We brainstormed and came up with many issues and I know Professor Rees has talked about many of them already but among them access to basic needs, universal access to basic needs such as housing, work, education, healthcare,

equity, learning universal values, nonviolent communication, all of nonviolent language and a less consumer society. Those were some of the issues brought up at this brainstorming session.

ICON positioned itself for a new and holistic approach because we found that a lot of the peace education programs look at study of values, we also looked at our history syllabus and everybody knows about Hitler, very few people studied about Gandhi or studied about Martin Luther King or any of the peace movements, and there have been many peace movements before and after Gandhiji we heard about them but our history books don't reflect on those. Gandhiji also emphasized the need for learning about other cultures and other languages to broaden the perspective.

In her concluding words, Ela Gandhi said: we look forward to a long and healthy relationship with ICON Australia, a relationship which will share ideas, which will share information and knowledge, and grow from that networking and that relationship. *(Full speech appears separately elsewhere in the magazine*

Gambhir Watts, Founder and Chief Coordinator International Centre of Nonviolence Australia

Celebrations of Bhavan's Holi Mahotsav 2013: A Report

Over three autumn days Bharatiya Vidya Bhavan Australia celebrated the 11th anniversary of the Holi Mahotsav starting on Friday 5 April and finishing on Sunday 7 April 2013 at Tumbalong Park in Darling Harbour, Sydney. An estimated 12000-15000 people attended the Sunday festivities. Saturday festivities were attended by 4000-5000 people.

Our expectation were much higher 20,000 people on Sunday and 10,000 people on Saturday. The weather conditions (rain) seem to have effected the people turn up for the festivities.

Cooking demonstrations were conducted by three of the participating Indian restaurants: Taj Mahal Tandoori, Sweet Basil and Taj Sweets & Restaurant. People enjoyed and learned useful tips on Indian cooking. Demonstrators liked the enthusiasm of the people to learn new style and taste of food and gave useful tips to enthusiastic participants. People tasted the food and asked for quick tips to try at home. Looking at the enthusiasm of the people in Sydney to taste and learn new food, cooking demonstrations will now be a part of Holi Mahotsav each year.

Over five hundred artists performed during the festival days and represented a rich mixture of culture, spirituality and entertainment. The cultural performances included: Indian, Bollywood, Classical, Bhangra and Belly dances, fusion and folk music, Punjabi songs, Balinese and Chinese performances and a surprise flash mob which engaged into dance the standing audiences. The music and dance, yoga, prayers, meditation activities and dance and art workshops lasted for all three days. The visitors could enjoy delicious vegetarian Indian food and craft stalls.

The first day of the festival was dedicated to schools, young people and children. Thanks to the great support of the Department of Education and Communities of Government of NSW and Sydney Region India Calling Program many school groups participated with group performances and in art workshops. At the VIP session for school day Dr Phil Lambert, Regional Director of Department of Education and Communities of Government of NSW expressed his delight for the mutual cooperation and engagement of school children in stage and workshop activities. Seven school regions,

namely Mascot Public School PS, Cronulla PS, Carlton Sth PS, Ashbury PS, Canterbury PS and Janali PS were to participate but due to whether conditions only two schools, namely Botany PS and Carlton Sth PS made to the festivities. The special school day has become an annual tradition since last year.

Saturday was the day of spirituality. At noon time people had started to gather at Martin Place enjoying ISKCON Sydney stage performances while waiting for a street procession of more than 500 participants to start. Departing from Martin Place people passed through Sydney CBD and Sydney Town Hall and culminated into Tumbalong Park. The procession included Rath Yatra (hand pulled Chariot) of Lord

Jagannätha. The ISKCON devotees chanted prayers and praises of the Lord while pulling the chariot together with procession participants.

On Sunday the traditional practice of colour throwing took place in the designated area in multiple sessions throughout whole afternoon. This joyful activity brought many people of different cultural background together and was celebrated with happiness and harmony among the participants and viewers.

During the special VIP session held on the last day of the festival the special guests expressed the importance of such events as Holi Mahotsav and demonstrated their support and pleasure of being part of the celebrations. Among the respected speakers who graced the festival there were: Michelle Rowland MP representing Senator the Hon Kate Lundy, Parliament of Australia; The Hon Geoff Lee, Member for Parramatta, Parliament of NSW (representing The Hon Victor Dominello, Minister for Citizenship and Communities); The Hon Amanda Fazio, Opposition Whip, Parliament of NSW (representing The Hon John Robertson - Leader of the Opposition); and Dr Phil Lambert, Regional Director, Department of Education and Communities, Government of NSW. Among other visiting VIP guests there were present: Hon. Arun Kumar Goel, Consul General of India, Sydney, Government of India; Dr Stepan Kerkyasharian, Chair, Community Relations Commission for a multicultural NSW; Thuat V. Nguyen, President, Children's Festival Organisation Inc; Shanker Dhar; Amarinder Bajwa, Hashim Durrani; Harmohan Singh Walia; Neera Shrivastav; Dr Yadu Singh and Linda O'Brien.

The success of Holi Mahotsav could not have been possible without the selfless and untiring support of nearly thousand artists and performers from a large number of dance academies and cultural groups. We bow before and salute them with humility and greatest gratitude. The crowd passionately danced and sang with the performers and enjoyed every bit of the multicultural program. Our special thanks come to all performing artists—Indo-Aust Bal Bharathi Vidyalaya-Hindi School Inc; Sahaja Yoga Music of Joy; Botany Public School; India Jiva; Om Multicultural; Aparna Dixit; Aziff Tribal Belly Dance; Chinese Traditional Dance; Samskriti School of Dance; Shyam Dance; Akriti Gupta; Mayur Academy; Maya Youth in Performing Arts; Mayur Academy; Priya Dewan Bollywood Dance Academy; Alisha Singh; Rhythmic Squad; Nanhi Kaliyan; Global Gypsies; Taal Dance Academy; Geetanjali School of Dance and Performing Arts; Gatka; Ghawazi Caravan; Mango Dance; Nupur Dance Group; Chiknis; Seema Bharadwaj; Folk & Fun.

The food stalls during the Holi Mahotsav pepped up the festival by adding variety to the event. A wide selection of delicious Indian vegetarian meals, beverages and sweets was offered by renowned Indian restaurants: Govindas Pure Vegetarian, Swaad-Taste of India, Sweet Basil, Taj Sweets & Restaurant and Taj Mahal Tandoori. Stay Cool Tropical Sno, Sugar Cane Juice and Tall Grass Cane Juice brought cooling and calming drinks.

The stage performances were provided with direction by our great masters of ceremonies: Seema Bharadwaj, Monalisa Grover, Vijay Jogia, Reena Koak, Divya Sriram, Shalini Varmani, Soiam Raja and Sophil Raja.

Merchandise stalls and marquees offered great bargains such as traditional dresses, tops, fashion accessories, fancy bangles by Simply Gorgeous and artistic Henna art tattoos from Zenat Art Henna Tattoos. Lebara Mobile offered special SIM cards and discounted service plans for overseas calls. Vision Asia gave out discounted prices for their popular Indian

channels package. Among other stalls there were: UAE Exchange Australia PTY LTD, India Tourism, Desi Kangaroos TV, Bank of Baroda, Donate Life, Money Gram and Sahaja Yoga Meditation marquee.

We express our heartfelt gratitude to our main sponsors and supporters: Lebara Mobile; NSW Government: Premier of NSW, Community Relations Commission for a Multicultural NSW and Sydney Harbour Foreshore Authority; City of Sydney; LAC City Central & The Rocks NSW Police; Australian Government: Department of Immigration; India Tourism, Sydney; State Bank of India, Sydney; AFL Multicultural Program, Sahaja Yoga and ISKCON Sydney.

We are grateful to our media supporters, Desi Kangaroo TV, The Indian, Indus Age, Indian Link Newspaper & Radio, The Indian Down Under, The IndoAus Times, Punjab Times, Masala Newsline, Hindi Gaurav, Navtarang Newspaper & Radio, Nepalese Times, and the Epoch Times, Indian Times, SBS Radio, Chinese Newspaper, Sydney Morning Herald, Navtarang Media Group, The Immigration Centre Pty Ltd and ZEE TV who helped us in making this 2013 festival even brighter and more diverse.

We appreciate the help of the volunteers Ottavia Tonarelli, Nathan Nathakumaran, Denisse Pazita Codocco, Abhisha Srikumar, Xiao Li, Angela Darke, Andy Khai Duy Pham, Vishal Joshi and Vaidehi Joshi, Tom Li, Aaron Qin, Michelle Cheung, Micaela Agosteguis, Jonathan Perticara, Karina Flores Sasse, Shruti Arya, Haerim Han, Muhammad Bilal Sarwar, Yang Hu, Mi Christian, Serina Hajje.

We are grateful to Brendan Burke (Venue Hire Manager), Scott Eager (Venue Hire and Event Coordinator), Allison Jeny, and other staff from Sydney Harbour Foreshore Authority for their valuable contribution in hosting this festival.

बहुत दिनों पर

मैं तो बहुत दिनों पर चेता।

श्रम कर ऊबा
श्रम कण डूबा
सागर को खेना था मुझको रहा शिखर को खेता
मैं तो बहुत दिनों पर चेता।

थी मत मारी
था भ्रम भारी
ऊपर अम्बर गर्दीला था नीचे भंवर लपेटा
मैं तो बहुत दिनों पर चेता।

यह किसका स्वर
भीतर बाहर
कौन निराशा कुंठित घडियों में मेरी सुधी लेता
मैं तो बहुत दिनों पर चेता।

मत पछता रे
खेता जा रे
अन्तिम क्षण में चेत जाए जो वह भी सत्वर चेता
मैं तो बहुत दिनों पर चेता।

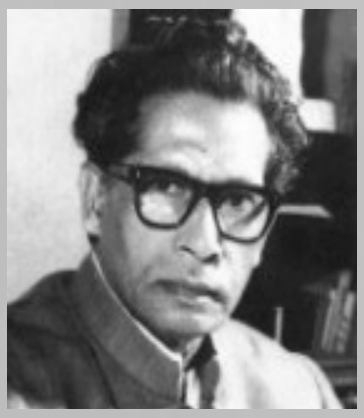

हरिवंश राय बच्चन (27 नवंबर, 1907 - 18 जनवरी, 2003) हिन्दी भाषा के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनकी कविताओं की लोकप्रियता का प्रधान कारण उसकी सहजता और संवेदनशील सरलता है । 'मधुबाला', 'मधुशाला' और 'मधुकलश' उनके प्रमुख संग्रह हैं। हरिवंश राय बच्चन को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', सरस्वती सम्मान एवं भारत सरकार द्वारा सन् 1976 में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। *साभार:* कविता कोश, http://www.kavitakosh.org, चित्र: http://gadyakosh.org

दोनों ओर प्रेम पलता है

दोनों ओर प्रेम पलता है।
सखि, पतंग भी जलता है हा! दीपक भी जलता है!

सीस हिलाकर दीपक कहता--
'बन्धु वृथा ही तू क्यों दहता?'
पर पतंग पड़ कर ही रहता

कितनी विह्वलता है!
दोनों ओर प्रेम पलता है।

बचकर हाय! पतंग मरे क्या?
प्रणय छोड़ कर प्राण धरे क्या?
जले नहीं तो मरा करे क्या?

क्या यह असफलता है!
दोनों ओर प्रेम पलता है।

कहता है पतंग मन मारे--
'तुम महान, मैं लघु, पर प्यारे,
क्या न मरण भी हाथ हमारे?

शरण किसे छलता है?'
दोनों ओर प्रेम पलता है।

दीपक के जलनें में आली,
फिर भी है जीवन की लाली।
किन्तु पतंग-भाग्य-लिपि काली,

किसका वश चलता है?
दोनों ओर प्रेम पलता है।

जगती वणिग्वृत्ति है रखती,

उसे चाहती जिससे चखती;
काम नहीं, परिणाम निरखती।

मुझको ही खलता है।
दोनों ओर प्रेम पलता है।

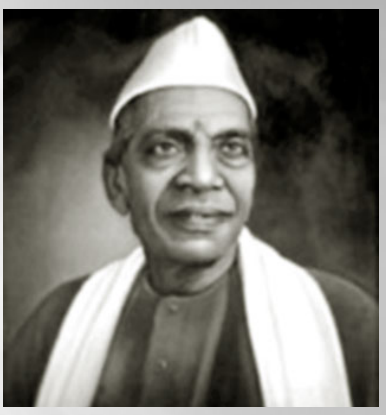

मैथिली शरण गुप्त (1886 - 1964) का जन्म उत्तर प्रदेश के झाँसी जिला में चिरगाँव ग्राम में हुआ था। इनकी शिक्षा घर पर ही हुई और वहीं इन्होंने संस्कृत, बंगला, मराठी ओर हिंदी सीखी। उनकी रचना "जयद्रथ वध" (1910), "भारत भारती" (1912), पंचवटी, नहुष, मेघनाद वध आदि हिंदी साहित्य के अमुल्य रतन समझे जाते हैं। महाकाव्य "साकेत" (1932) के लिये उन्हे मंगला प्रसाद पारितोषिक प्रदान किया गया। भारत सरकार द्वारा उनको पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। इनके रचनाओं में देशभक्ति, बंधुत्व, गांधीवाद, मानवता तथा नारी के प्रति करुणा और सहानुभूति व्यक्त की गई है। इनके काव्य का मुख्य स्वर राष्ट्र-प्रेम है। वे भारतीय संस्कृति के गायक थे। इन्ही कारण से उन्हे राष्ट्रकवि का सम्मान दिया गया है। स्वतंत्रता संग्राम के लिये उन्हे एकाधिक बार जेल भी जाना पड़ा। साभार : *http://hi.bharatdiscovery.or*, चित्र : www.indianetzone.com

अनमोल वचन

- मनुष्य अक्सर सत्य का सौंदर्य देखने में असफल रहता है, सामान्य व्यक्ति इससे दूर भागता है और इसमें निहित सौंदर्य के प्रति अंधा बना रहता है। ~ महात्मा गांधी
- तीन बातें कभी न भूलें—प्रतिज्ञा करके, क़र्ज़ लेकर और विश्वास देकर। ~ भगवान महावीर
- मनुष्य जितना ज्ञान में घुल गया हो उतना ही कर्म के रंग में रंग जाता है। ~ विनोबा भावे
- कुल की प्रतिष्ठा भी विनम्रता और सदव्यवहार से होती है, हेकड़ी और रुआब दिखाने से नहीं। ~ मुँशी प्रेमचंद
- मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता और जागते रहने से भय नहीं होता। ~ आचार्य चाणक्य
- पुष्प की सुगंध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती लेकिन मानव के सदगुण की महक सब ओर फैल जाती है। ~ गौतम बुद्ध

संत कबीरदास दोहावली

माया छाया एक सी, बिरला जाने कोय।
भगता के पीछे लगे, सम्मुख भागे सोय ॥

आया था किस काम को, तु सोया चादर तान।
सुरत सम्भाल ए गाफिल, अपना आप पहचान ॥

क्या भरोसा देह का, बिनस जात छिन मांह।
साँस- साँस सुमिरन करो और यतन कुछ नांह ॥

गारी ही सों ऊपजे, कलह कष्ट और मींच।
हारि चले सो साधु है, लागि चले सो नींच ॥

दुर्बल को न सताइए, जाकि मोटी हाय।
बिना जीव की हाय से, लोहा भस्म
हो जाय ॥

दान दिए धन ना घटे, नदी ने घटे
नीर।

रहे को अचरज है, गए अचम्भा

औरन को शीतल करे, आपहु

अपनी आँखों देख लो, यों क्या कहे कबीर ॥
दस द्वारे का पिंजरा, तामें पंछी का कौन।
कौन ॥
ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
शीतल होय ॥

कबीर (1398-1518) कबीरदास, कबीर साहब एवं संत कबीर जैसे रूपों में प्रसिद्ध मध्यकालीन भारत के स्वाधीनचेता महापुरुष थे। इनका परिचय, प्राय: इनके जीवनकाल से ही, इन्हें सफल साधक, भक्त कवि, मतप्रवर्तक अथवा समाज सुधारक मानकर दिया जाता रहा है तथा इनके नाम पर कबीरपंथ नामक संप्रदाय भी प्रचलित है। संत कबीर दास हिंदी साहित्य के भक्ति काल के इकलौते ऐसे कवि हैं, जो आजीवन समाज और लोगों के बीच व्याप्त आडंबरों पर कुठाराघात करते रहे। कबीरदास ने हिन्दू-मुसलमान का भेद मिटा कर हिन्दू-भक्तों तथा मुसलमान फ़कीरों का सत्संग किया। तीन भागों; रमैनी, सबद और साखी में विस्तृत कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। साभार: *www.hindisahityadarpan.in, http://www.kavitakosh.org,* चित्र : *www.hindu-blog.com*

शून्य से टकरा कर सुकुमार

शून्य से टकरा कर सुकुमार
करेगी पीड़ा हाहाकार,
बिखर कर कन कन में हो व्याप्त
मेघ बन छा लेगी संसार!

पिघलते होंगे यह नक्षत्र
अनिल की जब छू कर नि:श्वास
निशा के आँसू में प्रतिबिम्ब
देख निज काँपेगा आकाश!

विश्व होगा पीड़ा का राग
निराशा जब होगी वरदान
साथ ले कर मुरझाई साध
बिखर जायेंगे प्यासे प्राण!

उदधि नभ को कर लेगा प्यार
मिलेंगे सीमा और अनंत
उपासक ही होगा आराध्य
एक होंगे पतझड वसंत!

बुझेगा जल कर आशा-दीप
सुला देगा आकर उन्माद,
कहाँ कब देखा था वह देश?
अतल में डूबेगी यह याद!

प्रतीक्षा में मतवाले नयन
उड़ेंगे जब सौरभ के साथ,
हृदय होगा नीरव आह्वान
मिलोगे क्या तब हे अज्ञात?

महादेवी वर्मा विरहपूर्ण गीतों की गायिका, आधुनिक युग की मीरा कही जाती हैं। "पद्मश्री" एवं "भारतीय ज्ञानपीठ" की उपाधि से सम्मानित महादेवी वर्मा वेदनाभाव की कवियित्री हैं। इनके काव्य का आधार वास्तव में प्रेमात्मक रहस्यवाद ही है। महादेवी वर्मा ने अपने अज्ञात प्रियतम को स्वरूपितकर, उससे अपना सम्बन्ध जोड़ा और अपने रहस्यवाद की अभिव्यंजना को चित्रात्मक भाषा में व्यक्त किया। उनके काव्य में शुद्ध छायावादी प्रकृति-दर्शन मिलता है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा और यामा इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। साभार: www.http://hi.bharatdiscovery.org चित्र: http://kv1madurailibrary.wordpress.com

मीरां बाई पदावली

शबरी प्रसंग

अच्छे मीठे फल चाख चाख, बेर लाई भीलणी।
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती।।

नीचे कुल ओछी जात, अति ही कुचीलणी।
जूठे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत त्राण।।

उँच नीच जाने नहीं, रस की रसीलणी।
ऐसी कहा वेद पढी, छिन में विमाण चढी।।

हरि जू सू बाँध्यो हेत, बैकुण्ठ में झूलणी।
दास मीरां तरै सोई, ऐसी प्रीति करै जोइ।।

साभार: http://www.rishichintan.org/

विद्यार्थी भावना

न्यूटन ने सारी आयु बड़ी आश्चर्यजनक वैज्ञानिक खोजें कीं, पर अंत में उसने यही कहा था कि "हम अथाह ज्ञान-सागर के किनारे पर खड़े हुए हैं और उथले पानी में से कुछ सीप-घोंघे आदि ही ढूँढ सके हैं। सृष्टि के अनंत ज्ञान-सागर में अभी तक मनुष्य जाति बहुत कम जानकारी प्राप्त कर सकी है। अभी तो ढूढने के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा हुआ है।" जब उच्च कोटि के ज्ञानवान् अपनी जानकारी को इतना कम बताते हैं तो यह बड़ी उपहासास्पद बात है कि हम लोग अपने तृण समान ज्ञान के लिये कट्टरता का मार्ग ग्रहण करें। कई जिज्ञासु जितना जान चुके होते हैं उसी में कट्टर बन जाते हैं, वे अपनी जानकारी के अतिरिक्त अन्य लोगों के मतों को मिथ्या समझते हैं। ऐसी कट्टरता आगे उन्नति का मार्ग रोक देती है। कोई अपने विश्वासों पर दृढ़ रह सकता है पर उसे आगे की जानकारी भी लेनी चाहिए, और बातों पर भी उदार दृष्टि से विचार करना चाहिए। यह विद्यार्थी भावना आपको बहुत हद तक ज्ञानवान् बनने में सहायता दे सकती है।

साभार: http://www.rishichintan.org/

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य
बुद्धि बढाने की वैज्ञानिक विधि - पृ. 25

ग़ज़ल

मेरे अल्लाह मेरे सब्र की, ईमान की ख़ैर
यही सामान बचा है मेरे सामान की ख़ैर

यह तो सदियों में भी इन्सान नहीं बन पाया
तुझसे क्या माँगू ख़ुदाया तेरे इन्सान की ख़ैर

दामने चाक[1] के रुतबे[2] से जो आगाह[3] नहीं
बस वही माँगते हैं जेबो गिरेबान[4] की ख़ैर

जी नहीं चाहता जीने को जिये जाते हैं
हम ही ने माँगी थी जी जान से जी जान की ख़ैर

एक मरने की तमन्ना ही बची है दिल में
या इलाही मेरी इस आख़री अरमान की ख़ैर

क्या कहें अब वह हमें जानता पहचानता है
रोज हम माँगते हैं आपके दरबान की ख़ैर

हर कोई अपने झमेलों में पड़ा है राहत
किस को फ़ुर्सत है कि माँगे कोई ईमान की ख़ैर ।

1. फटा हुआ पल्लू 2. ऊँचा स्थान 3. जानकार 4. लिबास

सिडनी वासी विख्यात उर्दू कवि ओम कृष्ण राहत ने केवल 13 साल की उम्र में उर्दू कविता का पहला संकलन प्रकाशित किया गया था। वह उर्दू, हिन्दी और पंजाबी में कविता, लघु कहानी और नाटक लिखते हैं। राजेंद्र सिंह बेदी, ख्वाजा अहमद अब्बास पुरस्कार और ऑस्ट्रेलिया की उर्दू सोसायटी निशान-ए-उर्दू के अलावा उन्हें उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाब और पश्चिम बंगाल की उर्दू अकादमियों द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है । उपरोक्त कृति, *ताजमहल* , कवि ओम कृष्ण राहत द्वारा सन 2007 में पर्काशित काव्य संग्रह, *दो क़दम आगे*, में से संकलित की गयी है

श्री गुरु ग्रंथ साहिब से

॥ जपु ॥

जे को बुझै होवै सचिआरु ॥
धवलै उपरि केता भारु ॥

धरती होरु परै होरु होरु ॥
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥

जीअ जाति रंगा के नाव ॥
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥

एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥
लेखा लिखिआ केता होइ ॥

केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै

साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥

असंख जप असंख भाउ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख जोग मनि रहहि ॥

॥ उदास ॥

असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥

असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥

वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥

असंख मूरख अंध घोर ॥
असंख चोर हरामखोर ॥

असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥

असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥

नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥

जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥

असंख नाव असंख थाव ॥
अगम अगम असंख लोअ ॥

असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥
अखरी नामु अखरी सालाह ॥
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥

साभार: http://www.gurbanifiles.org/

नाम-रूप का भेद

नाम-रूप के भेद पर कभी किया है ग़ौर ?
नाम मिला कुछ और तो शक्ल-अक्ल कुछ और
शक्ल-अक्ल कुछ और नयनसुख देखे काने
बाबू सुंदरलाल बनाये ऐंचकताने
कहँ 'काका कवि', दयाराम जी मारें मच्छर
विद्याधर को भैंस बराबर काला अक्षर

मुंशी चंदालाल का तारकोल सा रूप
श्यामलाल का रंग है जैसे खिलती धूप
जैसे खिलती धूप, सजे बुश्शर्ट पैंट में -
ज्ञानचंद छै बार फ़ेल हो गये टैंथ में
कहँ 'काका कवि',ज्वालाप्रसाद जी बिल्कुल ठंडे
पंडित शांतिस्वरूप चलाते देखे डंडे

देख अशर्फ़ीलाल के घर में टूटी खाट
सेठ भिखारीदास के मील चल रहे आठ
मील चल रहे आठ, करम के मिटें न लेखे
धनीराम जी हमने प्रायः निर्धन देखे
कहँ 'काका कवि', दूल्हेराम मर गये कुँवारे
बिना प्रियतमा तड़पें प्रीतमसिंह बेचारे

पेट न अपना भर सके जीवन भर जगपाल
बिना सूँड़ के सैकड़ों मिलें गणेशीलाल
मिलें गणेशीलाल, पैंट की क्रीज़ सम्हारी
बैग कुली को दिया, चले मिस्टर गिरधारी
कहँ ''काका कवि', कविराय, करें लाखों का सट्टा
नाम हवेलीराम किराये का है अट्टा

चतुरसेन बुद्धू मिले, बुद्धसेन निर्बुद्ध
श्री आनंदीलाल जी रहें सर्वदा क्रुद्ध
रहें सर्वदा क्रुद्ध, मास्टर चक्कर खाते
इंसानों को मुंशी तोताराम पढ़ाते
कहँ 'काका कवि',बलवीर सिंह जी लटे हुये हैं
थानसिंह के सारे कपड़े फटे हुये हैं

बेच रहे हैं कोयला, लाला हीरालाल
सूखे गंगाराम जी, रूखे मक्खनलाल
रूखे मक्खनलाल, झींकते दादा-दादी
निकले बेटा आशाराम निराशावादी
कहँ 'काका कवि', भीमसेन पिद्दी से दिखते
कविवर 'दिनकर 'छायावादी कविता लिखते

तेजपाल जी भोथरे, मरियल से मलखान
लाला दानसहाय ने करी न कौड़ी दान
करी न कौड़ी दान, बात अचरज की भाई
वंशीधर ने जीवन-भर वंशी न बजाई
कहँ 'काका कवि', फूलचंद जी इतने भारी
दर्शन करते ही टूट जाये कुर्सी बेचारी

खट्टे-खारी-खुरखुरे मृदुलाजी के बैन
मृगनयनी के देखिये चिलगोजा से नैन
चिलगोजा से नैन, शांता करतीं दंगा
नल पर नहातीं, गोदावरी, गोमती, गंगा
कहँ 'काका कवि',
लज्जावती दहाड़ रही हैं
दर्शन देवी लंबा घूँघट काढ़ रही हैं

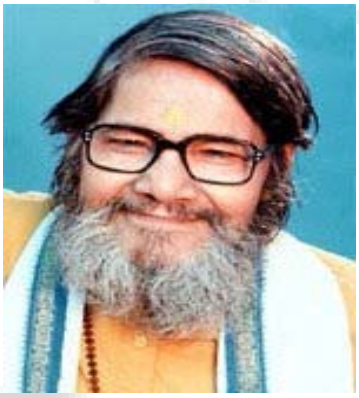

अज्ञानी निकले निरे पंडित ज्ञानीराम
कौशल्या के पुत्र का रक्खा दशरथ नाम
रक्खा दशरथ नाम, मेल क्या खूब मिलाया
दूल्हा संतराम को आई दुल्हन माया

कहँ 'काका कवि', कोई-कोई रिश्ता बड़ा निकम्मा
पार्वती देवी हैं शिवशंकर की अम्मा।

हाथरस में जन्मे काका हाथरसी (वास्तविक नाम: प्रभुलाल गर्ग) हिंदी हास्य कवि थे। काका हाथरसी हिन्दी हास्य व्यंग्य कविताओं के पर्याय माने जाते हैं। वे अपनी हास्य कविताओं को फुलझडियाँ कहा करते थे। भारतीय सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित काका हाथरसी का कविता संग्रह इस प्रकार है:- काका के कारतूस, काकादूत, हंसगुल्ले, काका के कहकहे, काका के प्रहसन, काका की फुलझड़ियाँ, लूटनीति मंथन करि, खिलखिलाहट, काका तरंग, जय बोलो बेईमान की, यार सप्तक, काका के व्यंग्य बाण। काका हाथरसी पुरस्कार, इनके नाम से चलाये गये काका हाथरसी पुरस्कार ट्रस्ट, हाथरस द्वारा प्रतिवर्ष एक सर्वश्रेष्ठ हास्य कवि को प्रदान किया जाता है। *साभार:* http://bharatdiscovery.org/

पंख

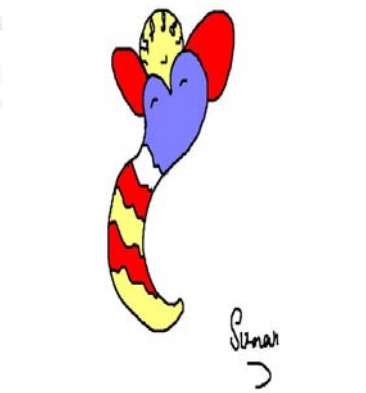

पंख लगा कर बाँहों में मै
ऊपर उड़ती जाऊँगी
सब पेड़ों पे फुदक फुदक कर
मीठे फल मैं खाऊंगी |
मीठे फलों को खायके
मैं नोना को मिलने जाऊंगी
छुप्पा छुप्पी खेलुंगी
और पेड़ों पे छुप जाउंगी ||

चंदा तारों की चांदनी में मैं
आँख मिचोली खेलूँगी ||
मीठी धुन में गाने गाकर
मैं सबका मन बहलाऊँगी
पेड़ों की शाखाओं में मैं
अपना धाम बनाउंगी
पंख लगा कर बाँहों में मैं
ऊपर उड़ती जाउंगी ||

-सुमन

सुमन हिन्दी और अंग्रेजी में कविता लिखती हैं और एक ग्राफिक कलाकार हैं।

मकान

आज की रात बहुत गर्म हवा चलती है
आज की रात न फुटपाथ पे नींद आयेगी।
सब उठो, मैं भी उठूँ, तुम भी उठो, तुम भी उठो
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जायेगी।

ये ज़मीं तब भी निगल लेने पे आमादा थी
पाँव जब टूटती शाखों से उतारे हमने।
इन मकानों को खबर है न मकीनों को खबर
उन दिनों की जो गुफाओं में गुजारे हमने।

हाथ ढलते गये सांचे में तो थकते कैसे
नक्श के बाद नये नक्श निखारे हमने।
की ये दीवार बलंद, और बलंद, और बलंद,
बाम-ओ-दर और जरा और सँवारे हमने।

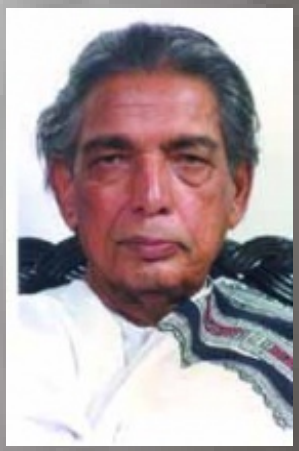

आँधियाँ तोड़ लिया करती थी शम्ओं की लवें
जड़ दिये इसलिये बिजली के सितारे हमने।
बन गया कस्र तो पहरे पे कोई बैठ गया
सो रहे खाक पे हम शोरिश-ए-तामीर लिये।

अपनी नस-नस में लिये मेहनत-ए-पैहम की थकन
बंद आंखों में इसी कस्र की तस्वीर लिये।
दिन पिघलता है इसी तरह सरों पर अब तक
रात आंखों में खटकती है सियह तीर लिये।

आज की रात बहुत गरम हवा चलती है
आज की रात न फुटपाथ पे नींद आयेगी।
सब उठो, मैं भी उठूँ, तुम भी उठो, तुम भी उठो
कोई खिड़की इसी दीवार में खुल जायेगी।-*कैफ़ी आज़मी परिचय*

-19 जनवरी 1919, आजमगढ़ (उत्तर प्रदेश) में जन्में, 'पद्म श्री' से अलंकृत कैफ़ी आज़मी को उनकी किताब 'आवारा सिज़्दे' के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया। हिंदी, उर्दू भाषा में कविता, गजल लिखने वाले कैफ़ी आज़मी को सोवियत लैन्ड नेहरू पुरस्कार, लोटस अवार्ड, महाराष्ट्र उर्दू अकादमी की ओर से विशेष पुरस्कार आदि अन्य अनेक पुरस्कार समय-समय पर मिलते रहे। उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार तथा सन 2000 में दिल्ली सरकार का पहला सहष्त्राब्दि पुरस्कार भी मिला। 10 मई 2002 मुम्बई में उनका निधन हो गया।

नील कण्ठ तो मै नही हूँ

नीलकण्ठ तो मैं नही हूँ
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है !
कवि होने की पीड़ा सह लूँ
क्यों दुख से बेचैन धरा है?

त्याग, शीलता, तप सेवा का
कदाचित रहा न किंचित मान।
धन, लोलुपता, स्वार्थ, अहं का,
फैला साम्राज्य बन अभिमान।

मानव मूल्य आहत पद तल,
आदर्श अग्नि चिता पर सज्जित।
है सत्य उपेक्षित सिसक रहा,
अन्याय, असत्य, शिखा सुसज्जित।

ले क्षत विक्षत मानवता को
कांधों पर अपने धरा है।
नील कण्ठ तो मैं नही हूँ
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है।

सौंदर्य नही उमड़ता उर में,
विद्रूप स्वार्थ ही कर्म आधार।
अतृप्त पिपासा धन अर्जन की,
डूबता रसातल निराधार।
निचोड़ प्रकृति को पी रहा,
मानव मानव को लील रहा।
है अंत कहीं इन कृत्यों का,
मानव! तूँ क्यों न संभल रहा?

असहाय रुदन चीत्कारों को,
प्राणों में अपने धरा है।
नीलकण्ठ तो मैं नही हूँ,
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है।

तृष्णा के निस्सीम व्योम में,
बन पिशाचर भटकता मानव।
संताप, वेदना से ग्रसित,
हर पल दुख झेल रहा मानव।

हर युग में हो सत्य पराजित,
शूली पर चढ़ें मसीहा क्यों?
करतूतों से फिर हो लज्जित,
उसी मसीहा को पूजें क्यों?

शिरोधार्य कर अटल सत्य को,
सीने में अंगार धरा है।
नीलकण्ठ तो मैं नही हूँ,
लेकिन विष तो कण्ठ धरा है।

आई. आई. आई. रूडकी (उत्तराँचल) से शिक्षित कवि कुलवंत सिंह काव्य, लेखन व हिंदी सेवाओं के लिए राजभाषा गौरव से सम्मानित किये जा चुके हैं। वे अनेक पत्रिकाएं व रचनाएँ पर्काशित कर चुके हैं। उनमे निम्नलिखित हैं—निकुंज, परमाणु व विकास, शहीद-ए-आजम भगत सिंह, चिरंतन व अन्य रचनाएँ। *कॉपी राईट:* कुलवंत सिंह, विज्ञान प्रशन मंच

उपरोक्त कविता, *प्रकृति*, कवि कुलवंत सिंह द्वारा सन 2008 में पर्काशित काव्य संग्रह, *चिरंतन*, में से संकलित की गयी है।

यह है भारत देश हमारा

चमक रहा उत्तुंग हिमालय यह नगराज हमारा ही है।
जोड़ नहीं धरती पर जिसका वह नगराज हमारा ही है।
नदी हमारी ही है गंगा प्लावित करती मधुरस धारा
बहती है क्या कहीं और भी ऐसी पावन कल-कल धारा?

सम्मानित जो सकल विश्व में महिमा जिनकी बहुत रही है
अमर ग्रन्थ वे सभी हमारे उपनिषदों का देश यही है।
गाएँगे यश सब इसका, यह है स्वर्णिम देश हमारा
आगे कौन जगत में हमसे यह है भारत देश हमारा।

यह है भारत देश हमारा महारथी कई हुए जहाँ पर
यह है देश मही का स्वर्णिम ऋषियों ने तप किए जहाँ पर
यह है देश जहाँ नारद के गूँजे मधुमय गान कभी थे
यह है देश जहाँ पर बनते सर्वोत्तम सामान सभी थे।

यह है देश हमारा भारत पूर्ण ज्ञान का शुभ्र निकेतन
यह है देश जहाँ पर बरसी बुद्धदेव की करुणा चेतन
है महान अति भव्य पुरातन गूँजेगा यह गान हमारा
है क्या हम-सा कोई जग में यह है भारत देश हमारा।

विघ्नों का दल चढ़ आए तो उन्हें देख भयभीत न होंगे
अब न रहेंगे दलित-दीन हम कहीं किसी से हीन न होंगे
क्षुद्र स्वार्थ की ख़ातिर हम तो कभी न ओछे कर्म करेंगे
पुण्यभूमि यह भारत माता जग की हम तो भीख न लेंगे।

मिसरी-मधु-मेवा-फल सारे देती हमको सदा यही है
कदली चावल अन्न विविध अरु क्षीर सुधामय लुटा रही है
आर्य-भूमि उत्कर्षमयी यह गूँजेगा यह गान हमारा
कौन करेगा समता इसकी महिमामय यह देश हमारा। - *सुब्रह्मण्यम भारती*

सुब्रह्मण्यम भारती (11 दिसंबर 1882 - 11 सितंबर 1921), तमिलनाडु भारत, में जन्में एक स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक होने के साथ-साथ एक उत्तम श्रेणी के तमिल कवि थे। महाकवि भारती को कई भारतीय भाषाओं में महान अर्थ कवि के रूप में जाना जाता है। भारती गद्य और कविता दोनों रूपों में माहिर थे। भारती तमिल कविता की एक नई शैली शुरू करने में एक अग्रणी थे। उनकी रचनाओं ने जनता रैली करने के लिए दक्षिण भारत में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने में मदद की। महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, श्री अरबिंदो आदि उनकी समकालीन महान हस्तियाँ थीं।

गुलदस्ता से

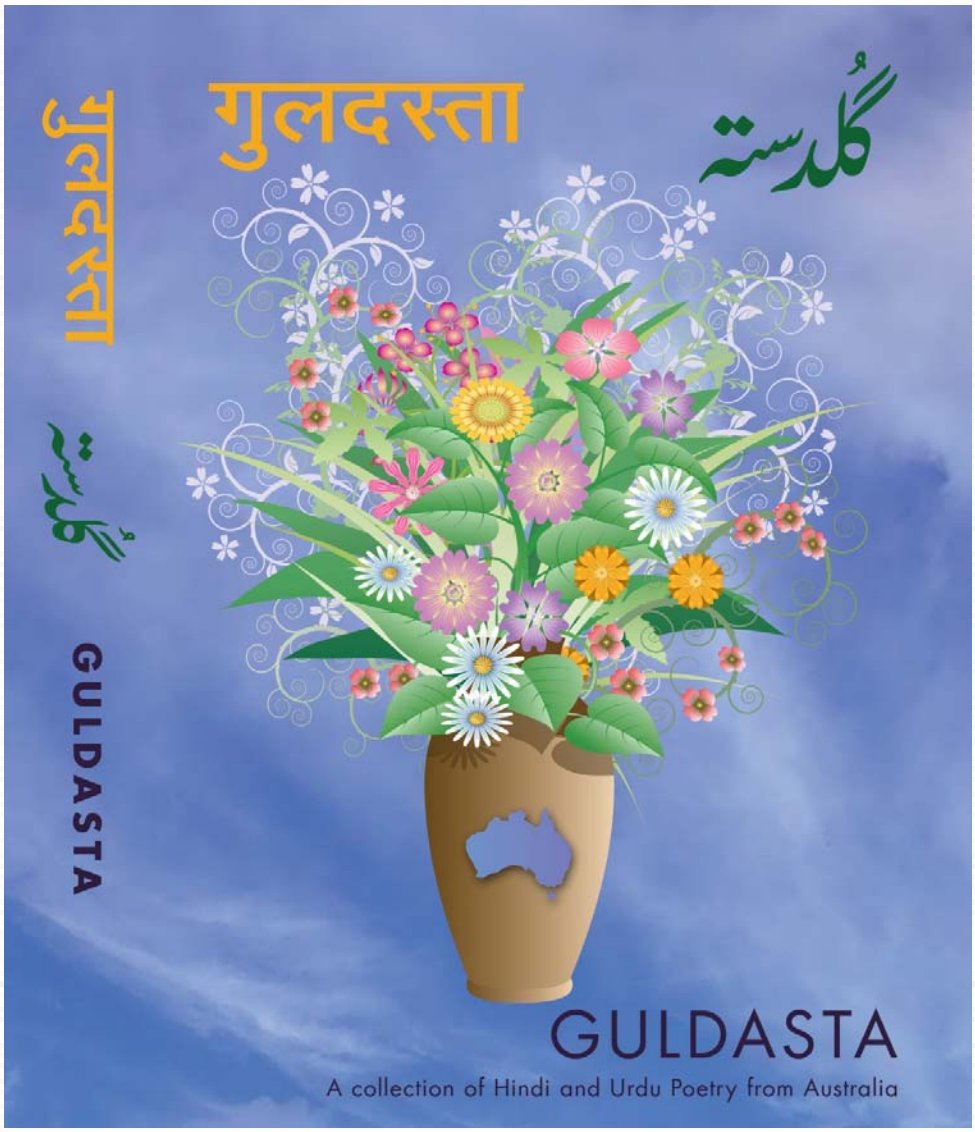

ग़ज़ल

आ रहा है तूफ़ान आने दीजिये
जिंदगी को मुस्कराने दीजिये

दीजिये बैसाख को बैसाखियाँ
गुस्ताख़ियों के ही बहाने दीजिये

लौट आएगी कभी है आपकी
त्रासदी को आज जाने दीजिये

ज़ोर कितना डोर में है सांस की
उम्र को भी आजमाने दीजिये

इन्द्रधनुषी अस्मिता की बात को
बिन सुने यूँ ही न ताने दीजिये

ज़िन्दगी के होंठ कितने संर्द हैं
दर्द को इतना बताने दीजिये।

-अनिल वर्मा

पी. वी. शंकरनकुट्टी द्वारा भारतीय विद्या भवन, के. एम्. मुंशी मार्ग, मुंबई – 400 007 के लिए पर्काशित
तथा सिद्धि प्रिंटर्स, 13/14, भाभा बिल्डिंग, खेतवाडी, 13 लेन, मुंबई – 400 004 में मुद्रित।
ले-आउट एवं डिज़ाइनिंग : समीर पारेख - क्रिएटिव पेज सेटर्स, गोरेगांव, मुंबई – 104, फ़ोन: 98690 08907
संपादक : विश्वनाथ सचदेव

नवनीत अब इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है। **www.navneet.bhavans.info** और साथ ही इन्टरनेट से नवनीत का चंदा भरने के लिए लॉगऑन करें
http://www.bhavans.info/periodical/pay_online.asp
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे
भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया
कक्ष 100, 515 केंट स्ट्रीट, सिडनी 2000, जीपीओ बॉक्स 4018, सिडनी 2001, फोन: 1300 242 826 (1300 भवन), फैक्स: 61 2 9267 9005,
ईमेल: **info@bhavanaustralia.org**
नवनीत समर्पण गुजराती में भी उपलब्ध

उसकी महक

न राह का अता-पता था
न मंज़िल का कुछ पता था,
पर किसी की जुल्फों की
महक का पता था।
उसी महक के सहारे
सूनी राह पर अकेला
चलता चला गया।
किसी की खुशबू में
महकता चला गया।
किसी के गीले बालों की
महक को खोजता हुआ,
आगे बढ़ता चला गया।

राह अकेली थी, अपने
संग चलने को पगडण्डी
का साथ खोज रही थी।
मेरी नादान निगाहें
किसी को अपना बनाने
की चाहत को खोज रहीं थीं।

बहारों की रुत थी।
बंजारे फूलों की महक ने
मुझे अपना दीवाना बनाया।
पर दिल ने उसी महक को
बार-बार अपने पास बुलाया।

सुबह से साँझ हो गयी,
मेरे आस पास जुगनू, तो
मुझे दिशा दिखाने लगे।
आकाश में चाँद भी बिलकुल
अकेला था मेरी तरह,
सितारों से भरी चूनर ने

चाँदनी को कहीं छिपा दिया था।

मैं चाँद के विरह को समझ रहा था
चाँद भी मेरे अकेलेपन में,
मेरा साथ दे रहा था।
रात भर हम दोनों साथ चलते रहे।
दोनों अपनी खोयी प्रियतमाओं को
सूनी राहों में खोजते रहे।
आखिर....
पूनम की रात को, चाँद को तो
अपनी चाँदनी मिल गयी।
पर मैं आज तक किसी की
महक में महक रहा हूँ।
किसी की याद में
अकेले ही भटक रहा हूँ।
न जाने कब.....?
मेरी पूनम की रात आएगी।
जो उसे मेरे पास ले आएगी।
आखिर इसी उम्मीद पर तो जिन्दा हूँ।
आस है कि.....
कभी तो वो मेरे पास आएगी।
मेरी राहों पे अपनी खुशबू बिछा जाएगी।

-शील निगम

आगरा (उत्तर प्रदेश) में 6 दिसम्बर 1952 को जन्मीं शील निगम एक कवयित्री, कहानीकार तथा स्क्रिप्ट लेखिका हैं। बी.ए.बी.एड. शिक्षित शील निगम ने मुंबई में 15 वर्ष प्रधानाचार्या तथा दस वर्षों तक हिंदी अध्यापन कार्य किया। विद्यार्थी जीवन में अनेक नाटकों, लोकनृत्यों तथा साहित्यिक प्रतियोगिताओं में सफलतापूर्वक प्रतिभाग लेने एवं पुरुस्कृत होने के अतिरिक्त दूरदर्शन पर काव्य-गोष्ठियों में प्रतिभाग, संचालन तथा साक्षात्कारों का प्रसारण कर चुकीं हैं। देश-विदेश की हिंदी के पत्र-पत्रिकाओं तथा ई पत्रिकाओं में प्रकाशित व प्रसारित इनकी कविताओं में 'परंपरा का अंत' 'तोहफा प्यार का', 'चुटकी भर सिन्दूर', 'अंतिम विदाई', 'अनछुआ प्यार', 'सहेली', 'बीस साल बाद' 'अपराध-बोध' आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त शील निगम 'टेम्स की सरगम' हिंदी उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद, एक मराठी फिल्म 'स्पंदन' ('बेस्ट फिल्म' और 'बेस्ट डायरेक्शन' के लिए पुरुस्कृत) का हिंदी अनुवाद कर चुकीं हैं।

तुलसी दास के दोहे

तुलसी अपने राम को, भजन करौ निरसंक
आदि अन्त निरबाहिवो जैसे नौ को अंक ।।

आवत ही हर्षे नही नैनन नही सनेह।
तुलसी तहां न जाइए कंचन बरसे मेह।।

तुलसी मीठे बचन ते सुख उपजत चहु ओर।
बसीकरण एक मंत्र है परिहरु बचन कठोर।।

बिना तेज के पुरूष अवशी अवज्ञा होय।
आगि बुझे ज्यों रख की आप छुवे सब कोय।।

तुलसी साथी विपत्ति के विद्या, विनय, विवेक।
साहस सुकृति सुसत्याव्रत राम भरोसे एक।।

काम क्रोध मद लोभ की जो लौ मन मैं खान।
तौ लौ पंडित मूरखों तुलसी एक समान।।

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बहारों जौ चाह्सी उजियार।।

नाम राम को अंक है, सब साधन है सून।
अंक गए कछु हाथ नही, अंक रहे दस गून।।

प्रभु तरु पर, कपि डार पर ते, आपु समान।
तुलसी कहूँ न राम से, साहिब सील निदान।।

तुलसी हरि अपमान तें होई अकाज समाज।
राज करत रज मिली गए सकल सकुल कुरुराज।।

तुलसी दास (1479–1586) ने हिन्दी भाषी जनता को सर्वाधिक प्रभावित किया। इनका ग्रंथ "रामचरित मानस" धर्मग्रंथ के रूप में मान्य है। तुलसी दास का साहित्य समाज के लिए आलोक स्तंभ का काम करता रहा है। इनकी कविताओं में साहित्य और आदर्श का सुन्दर समन्वय हुआ है। *साभार:* www.anubhuti-hindi.org, चित्र*: www.dlshq.org*

शहीद-ए-आजम भगत सिंह

धरती माँ धिक्कार रही थी,
चीत्कार रही थी।
कब पैदा होंगे?
जंजीरों को कब तोड़ेंगे?

जन्मा राजा भरत यहीं क्या?
नाम उसी से मिला मुझे क्या?
धरा यही दधीच क्या बोलो?
प्राण त्यागना अस्थि दान को?

बोलो बोलो राम कहाँ है?
मेरा खोया मान कहाँ है?
इक सीता का हरण किया था,
पूर्ण वंश को नष्ट किया था !

बोलो बोलो कृष्ण कहाँ है?
उसका बोला वचन कहाँ है?
धर्म हानि जब भारत होगी,
सत्य की फिर फिर होगी !

रो रो कर
वीर पुत्र

जीत

-कवि कुलवंत सिंह, शहीद-ए-आजम भगत सिंह खंड काव्य

उपरोक्त कविता, *शहीद-ए-आजम भगत सिंह*, कवि कुलवंत सिंह द्वारा सन 2010 में पर्काशित खंड काव्य, *शहीद-ए-आजम भगत सिंह*, में से संकलित की गयी है।

रे मन मूरख, जनम गँवायौ

रे मन मूरख, जनम गँवायौ।

करि अभिमान विषय-रस गीध्यौ, स्याम सरन नहिं आयौ॥

यह संसार सुवा-सेमर ज्यौं, सुन्दर देखि लुभायौ।

चाखन लाग्यौ रुई गई उ़डि, हाथ कछू नहिं आयौ॥

कहा होत अब के पछिताऐं, पहिलैं पाप कमायौ।

कहत सूर भगवंत भजन बिनु, सिर धुनि-धुनि पछितायौ॥

भावार्थ :- विषय रस में जीवन बिताने पर अंत समय में जीव को बहुत पश्चाताप होता है। इसी का विवरण इस पद के माध्यम से किया गया है। सूरदास कहते हैं - अरे मूर्ख मन! तूने जीवन खो दिया। अभिमान करके विषय-सुखों में लिप्त रहा, श्यामसुन्दर की शरण में नहीं आया। तोते के समान इस संसाररूपी सेमर वृक्ष के फल को सुन्दर देखकर उस पर लुब्ध हो गया। परन्तु जब स्वाद लेने चला, तब रुई उ़ड गयी (भोगों की नि:सारता प्रकट हो गयी,) तेरे हाथ कुछ भी (शान्ति, सुख, संतोष) नहीं लगा। अब पश्चाताप करने से क्या होता है, पहले तो पाप कमाया (पापकर्म किया) है। सूरदास जी कहते हैं- भगवान् का भजन न करने से सिर पीट-पीटकर (भली प्रकार) पश्चात्ताप करता है।

-सूरदास, हिंदी साहित्य में कृष्ण-भक्ति की धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में महाकवि सूरदास का नाम अग्रणी है। वे भगवान कृष्ण के साथ जुड़े भूमि ब्रज के कवि गायक थे। साहित्य लहरी सूरदास की लिखी रचना मानी जाती है। सूरसागर का मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण की लीलाओं का गान रहा है। सूरसारावली में कवि ने कृष्ण विषयक जिन कथात्मक और सेवापरक पदो का गान किया उन्हीं के सार रूप में उन्होने सारावली की रचना की। *साभार:* www.kavitakosh.org चित्र: *http://bhajansagar.blogspot.com.au*

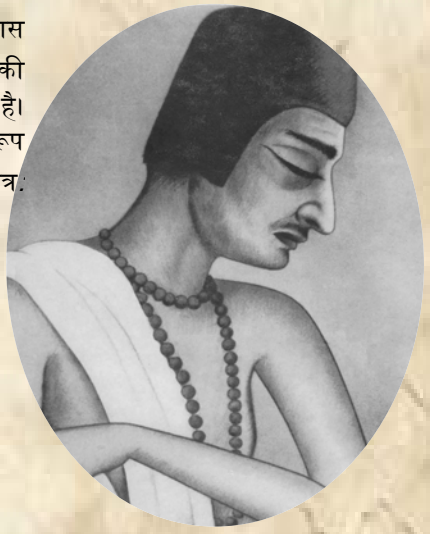

एक चिनगारी घर को जला देती है

एक समय एक गांव में रहीम खां नामक एक मालदार किसान रहता था। उसके तीन पुत्र थे, सब युवक और काम करने में चतुर थे। सबसे बड़ा ब्याहा हुआ था, मंझला ब्याहने को था, छोटा क्वांरा था। रहीम की स्त्री और बहू चतुर और सुशील थीं। घर के सभी प्राणी अपना-अपना काम करते थे, केवल रहीम का बूढ़ा बाप दमे के रोग से पीड़ित होने के कारण कुछ कामकाज न करता था। सात बरसों से वह केवल खाट पर पड़ा रहता था। रहीम के पास तीन बैल, एक गाय, एक बछड़ा, पंद्रह भेड़ें थीं। स्त्रियां खेती के काम में सहायता करती थीं। अनाज बहुत पैदा हो जाता था। रहीम और उसके बाल-बच्चे बड़े आराम से रहते; अगर पड़ोसी करीम के लंगड़े पुत्र कादिर के साथ इनका एक ऐसा झगड़ा न छिड़ गया होता जिससे सुखचैन जाता रहा था।

जब तक बूढ़ा करीम जीता रहा और रहीम का पिता घर का प्रबंध करता रहा, कोई झगड़ा नहीं हुआ। वह बड़े प्रेमभाव से, जैसा कि पड़ोसियों में होना चाहिए, एक-दूसरे की सहायता करते रहे। लड़कों का घरों को संभालना था कि सबकुछ बदल गया।

अब सुनिए कि झगड़ा किस बात पर छिड़ा। रहीम की बहू ने कुछ मुर्गियां पाल रखी थीं। एक मुर्गी नित्य पशुशाला में जाकर अंडा दिया करती थी। बहू शाम को वहां जाती और अंडा उठा लाती। एक दिन दैव गति से वह मुर्गी बालकों से डरकर पड़ोसी के आंगन में चली गयी और वहां अंडा दे आई। शाम को बहू ने पशुशाला में जाकर देखा तो अंडा वहां न था। सास से पूछा, उसे क्या मालूम था। देवर बोला कि मुर्गी पड़ोसिन के आंगन में कुड़कुड़ा रही थी, शायद वहां अंडा दे आयी हो।

बहू वहां पहुंचकर अंडा खोजने लगी। भीतर से कादिर की माता निकलकर पूछने लगी - बहू, क्या है?

बहू - मेरी मुर्गी तुम्हारे आंगन में अंडा दे गई है, उसे खोजती हूं। तुमने देखा हो तो बता दो।

कादिर की मां ने कहा - मैंने नहीं देखा। क्या हमारी मुर्गियां अंडे नहीं देतीं कि हम तुम्हारे अंडे बटोरती फिरेंगी। दूसरों के घर जाकर अंडे खोजने की हमारी आदत नहीं।

यह सुनकर बहू आग हो गई, लगी बकने। कादिर की मां कुछ कम न थी, एकएक बात के सौसौ उत्तर दिये। रहीम की स्त्री पानी लाने बाहर निकली थी। गालीगलौच का शोर सुनकर वह भी आ पहुंची। उधर से कादिर की स्त्री भी दौड़ पड़ी। अब सबकी-सब इकट्ठी होकर लगीं गालियां बकने और लड़ने। कादिर खेत से आ रहा था, वह भी आकर मिल गया। इतने में रहीम भी आ पहुंचा। पूरा महाभारत हो गया। अब दोनों गुंथ गए। रहीम ने कादिर की दाढ़ी के बाल उखाड़ डाले। गांव वालों ने आकर बड़ी मुश्किल से उन्हें छुड़ाया। पर कादिर ने अपनी दाढ़ी के बाल उखाड़ लिये और हाकिम परगना के इजलास में जाकर कहा - मैंने दाढ़ी इसलिए नहीं रखी थी जो यों उखाड़ी जाये। रहीम से हरजाना लिया जाए। पर रहीम के बूढ़े पिता ने उसे समझाया - बेटा, ऐसी तुच्छ बात पर लड़ाई करना मूर्खता नहीं तो क्या है। जरा विचार तो करो, सारा बखेड़ा सिर्फ एक अंडे से फैला है। कौन जाने शायद किसी बालक ने उठा लिया हो, और फिर अंडा था कितने का? परमात्मा सबका पालनपोषण करता है। पड़ोसी यदि गाली दे भी दे, तो क्या गाली के बदले गाली देकर अपनी आत्मा को मलिन करना उचित है? कभी नहीं, खैर! अब तो जो होना था, वह हो ही गया, उसे मिटाना उचित है, बढ़ाना ठीक नहीं। क्रोध पाप का मूल है। याद रखो, लड़ाई बढ़ाने से तुम्हारी ही हानि होगी।

परन्तु बूढ़े की बात पर किसी ने कान न धरा। रहीम कहने लगा कि कादिर को धन का घमंड है, मैं क्या किसी का दिया खाता हूं? बड़े घर न भेज दिया तो कहना। उसने भी नालिश ठोंक दी।

यह मुकदमा चल ही रहा था कि कादिर की गाड़ी की एक कील खो गई। उसके परिवार वालों ने रहीम के बड़े लड़के पर चोरी की नालिश कर दी।

अब कोई दिन ऐसा न जाता था कि लड़ाई न हो। बड़ों को देखकर बालक भी आपस में लड़ने लगे। जब कभी वस्त्र धोने के लिए स्त्रियां नदी पर इकट्ठी होती थीं, तो सिवाय लड़ाई के कुछ काम न करती थीं।

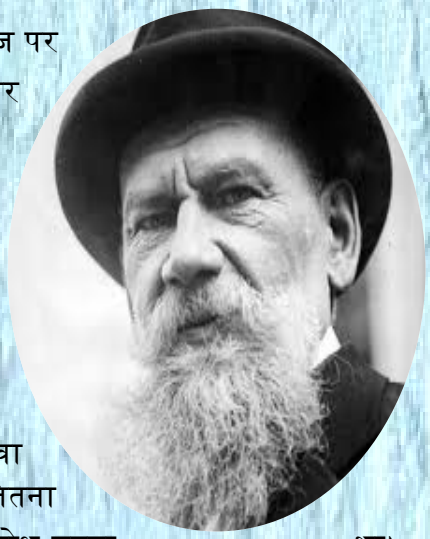

पहलेपहल तो गालीगलौज पर ही बस हो जाती थी, पर अब वे एकदूसरे का माल चुराने लगे। जीना दुर्लभ हो गया। न्याय चुकातेचुकाते वहां के कर्मचारी थक गए। कभी कादिर रहीम को कैद करा देता, कभी वह उसको बंदीखाने भिजवा देता। कुत्तों की भांति जितना ही लड़ते थे, उतना ही क्रोध बढ़ता था। छह वर्ष तक यही हाल रहा। बूढ़े ने बहुतेरा सिर पटका कि 'लड़को, क्या करते हो? बदला लेना छोड़ दो, बैर भाव त्यागकर अपना काम करो। दूसरों को कष्ट देने से तुम्हारी ही हानि होगी।' परंतु किसी के कान पर जूं तक न रेंगती थी।

सातवें वर्ष गांव में किसी के घर विवाह था। स्त्रीपुरुष जमा थे। बातें करते-करते रहीम की बहू ने कादिर पर घोड़ा चुराने का दोष लगाया। वह आग हो गया, उठकर बहू को ऐसा मुक्का मारा कि वह सात दिन चारपाई पर पड़ी रही। वह उस समय गर्भवती थी। रहीम बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब काम बन गया। गर्भवती स्त्री को मारने के अपराध में इसे बंदीखाने न भिजवाया तो मेरा नाम रहीम ही नहीं। झट जाकर नालिश कर दी। तहकीकात होने पर मालूम हुआ कि बहू को कोई बड़ी चोट नहीं आई, मुकदमा खारिज हो गया। रहीम कब चुप रहने वाला था। ऊपर की कचहरी में गया और मुंशी को घूस देकर कादिर को बीस कोड़े मारने का हुक्म लिखवा दिया। *(जारी ...)*

-लियो टॉलस्टॉय

-लियो टॉलस्टॉय उन्नीसवीं सदी के सर्वाधिक सम्मानित लेखकों में से एक हैं। उनका जन्म 9 सितम्बर 1828 को रूस के एक संपन्न परिवार में हुआ। उन्होंने रूसी सेना में भर्ती होकर क्रीमियन युद्ध (1855) में भाग लिया, लेकिन अगले ही वर्ष सेना छोड़ दी। लेखन के प्रति उनकी रुचि सेना में भर्ती होने से पहले ही जाग चुकी थी। उनके उपन्यासों 'वॉर एंड पीस' (1865-69) तथा 'एना कैरनीना' (1875-77) को साहित्यिक जगत में क्लासिक का दर्जा प्राप्त है। मन की शांति की तलाश में 1890 में उन्होंने अपनी दौलत का त्याग कर दिया और गरीबों की सेवा के लिए परिवार छोड़ दिया। 20 नवंबर 1910 को उनका देहांत हो गया।

साभार: http://www.hindisamay.com

एक जीवी, एक रत्नी, एक सपना

पालक एक आने गठ्ठी, टमाटर छह आने रत्तल और हरी मिर्चें एक आने की ढेरी "पता नहीं तरकारी बेचनेवाली स्त्री का मुख कैसा था कि मुझे लगा पालक के पत्तों की सारी कोमलता, टमाटरों का सारा रंग और हरी मिर्चों की सारी खुशबू उसके चेहरे पर पुती हुई थी।

एक बच्चा उसकी झोली में दूध पी रहा था। एक मुठ्ठी में उसने माँ की चोली पकड़ रखी थी और दूसरा हाथ वह बार-बार पालक के पत्तों पर पटकता था। माँ कभी उसका हाथ पीछे हटाती थी और कभी पालक की ढेरी को आगे सरकाती थी, पर जब उसे दूसरी तरफ बढ़कर कोई चीज़ ठीक करनी पड़ती थी, तो बच्चे का हाथ फिर पालक के पत्तों पर पड़ जाता था। उस स्त्री ने अपने बच्चे की मुठ्ठी खोलकर पालक के पत्तों को छुडाते हुए घूरकर देखा, पर उसके होठों की हँसी उसके चेहरे की सिल्वटों में से उछलकर बहने लगी। सामने पड़ी हुई सारी तरकारी पर जैसे उसने हँसी छिड़क दी हो और मुझे लगा, ऐसी ताज़ी सब्जी कभी कहीं उगी नहीं होगी।

कई तरकारी बेचनेवाले मेरे घर के दरवाज़े के सामने से गुज़रते थे। कभी देर भी हो जाती, पर किसी से तरकारी न ख़रीद सकती थी। रोज़ उस स्त्री का चेहरा मुझे बुलाता रहता था।

उससे खरीदी हुई तरकारी जब मैं काटती, धोती और पतीले में डालकर पकाने के लिए रखती-सोचती रहती, उसका पति कैसा होगा! वह जब अपनी पत्नी को देखता होगा, छूता होगा, तो क्या उसके होंठों में पालक का, टमाटरों का और हरी मिर्चों का सारा स्वाद घुल जाता होगा?

कभी-कभी मुझे अपने पर खीज होती कि इस स्त्री का ख़याल किस तरह मेरे पीछे पड़ गया था। इन दिनों मैं एक गुजराती उपन्यास पढ़ रही थी। इस उपन्यास में रोशनी की लकीर-जैसी एक लड़की थी—जीवी। एक मर्द उसको देखता है और उसे लगता है कि उसके जीवन की रात में तारों के बीज उग आए हैं। वह हाथ लम्बे करता है, पर तारे हाथ नहीं आते और वह निराश होकर जीवी से कहता है, "तुम मेरे गाँव में अपनी जाति के किसी आदमी से ब्याह कर लो। मुझे दूर से सूरत ही दिखती रहेगी।" उस दिन का सूरज जब जीवी देखता है, तो वह इस तरह लाल हो जाता है, जैसे किसी ने कुँवारी लड़की को छू लिया हो कहानी के धागे लम्बे हो जाते हैं, और जीवी के चेहरे पर दु:खों की रेखाएँ पड़ जाती हैं इस जीवी का ख़याल भी आजकल मेरे पीछे पड़ा हुआ था, पर मुझे खीज नहीं होती थीं, वे तो दु:खों की रेखाएँ थीं, वही रेखाएँ जो मेरे गीतों में थीं, और रेखाएँ रेखाओं में मिल जाती हैं पर यह दूसरी जिसके होठों पर हँसी की बूँदे थीं, केसर की तुरियाँ थीं।

दूसरे दिन मैंने अपने पाँवों को रोका कि मैं उससे तरकारी ख़रीदने नहीं जाऊँगी। चौकीदार से कहा कि यहाँ जब तरकारी बेचनेवाला आए तो मेरा दरवाज़ा खटखटाना दरवाजे पर दस्तक हुई। एक-एक चीज़ को मैंने हाथ लगाकर देखा। आलू-नरम और गड्ढों वाले। फरसबीन-जैसे फलियों के दिल सूख गए हों। पालक-जैसे वह दिन-भर की धूल फाँककर बेहद थक गई हो। टमाटर-जैसे वे भूख के कारण बिलखते हुए सो गए हो। हरी मिर्चें-जैसे किसी ने उनकी साँसों में से खुशबू

निकाल ली हो, मैंने दरवाज़ा बन्द कर लिया। और पाँव मेरे रोकने पर भी उस तरकारी वाली की ओर चल पड़े।

आज उसके पास उसका पति भी था। वह मंडी से तरकारी लेकर आया था और उसके साथ मिलकर तरकारियों को पानी से धोकर अलग-अलग रख रहा था और उनके भाव लगा रहा था। उसकी सूरत पहचानी-सी थी इसे मैंने कब देखा था, कहाँ देखा था- एक नई बात पीछे पड़ गई।

"बीबी जी, आप!"

"मैं पर मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।"

"इसे भी नहीं पहचाना? यह रत्ती!"

"माणकू रत्ती।" मैंने अपनी स्मृतियों में ढूँढा, पर माणकू और रत्ती कहीं मिल नहीं रहे थे।

"तीन साल हो गए हैं, बल्कि महीना ऊपर हो गया है। एक गाँव के पास क्या नाम था उसका आपकी मोटर खराब हो गई थी।"

"हाँ, हुई तो थी।"

पूरी तलाशी ली जाती थी कि कहीं कोई अफ़ीम, शराब या किसी तरह की कोई और चीज़ तो नहीं ले जा रहा। उस ट्रक की भी तलाशी ली गई।

"और आप वहाँ से गुज़रते हुए एक ट्रक में बैठकर धुलिया आए थे, नया टायर ख़रीदने के लिए।"

"हाँ-हाँ।" और फिर मेरी स्मृति में मुझे माणकू और रत्ती मिल गए।

रत्ती तब अधखिली कली-जैसी थी और माणकू उसे पराए पौधे पर से तोड़ लाया था। ट्रक का ड्राइवर माणकू का पुराना मित्र था। उसने रत्ती को लेकर भागने में माणकू की मदद की थी। इसलिए रास्ते में वह माणकू के साथ हँसी-मज़ाक करता रहा।

रास्ते के छोटे-छोटे गाँवों में कहीं ख़रबूजे बिक रहे होते, कहीं ककड़ियाँ, कहीं तरबूज़! और माणकू का मित्र माणकू से ऊँची आवाज़ में कहता, "बड़ी नरम हैं, ककडियाँ ख़रीद ले। तरबूज तो सुर्ख लाल हैं और खरबूजा बिलकुल मिश्री है ख़रीदना नहीं है तो छीन ले वाह रे रांझे!"

'अरे, छोड़ मुझे रांझा क्यों कहता है? रांझा साला आशिक था कि नाई था? हीर की डोली के साथ भैंसें हाँककर चल पड़ा। मैं होता न कहीं।'

'वाह रो माणकू! तू तो मिर्ज़ा है मिर्ज़ा!'

'मिर्ज़ा तो हूँ ही, अगर कहीं साहिबाँ ने मरवा न दिया तो!' और फिर माणकू अपनी रत्ती को छेड़ता, 'देख रत्ती, साहिबाँ न बनना, हीर बनना।'

'वाह रे माणकू, तू मिर्ज़ा और यह हीर! यह भी जोड़ी अच्छी बनी!' आगे बैठा ड्राइवर हँसा।

इतनी देर में मध्यप्रदेश का नाका गुज़र गया और महाराष्ट्र की सीमा आ गई। यहाँ पर हर एक मोटर, लॉरी और ट्रक को रोका जाता था। पूरी तलाशी ली जाती थी कि कहीं कोई अफ़ीम, शराब या किसी तरह की कोई और चीज़ तो नहीं ले जा रहा। उस ट्रक की भी तलाशी ली गई। कुछ न मिला और ट्रक को आगे जाने के लिए रास्ता दे दिया गया। ज्यों ही ट्रक आगे बढ़ा, माणकू बेतहाशा हँस दिया।

'साले अफ़ीम खोजते हैं, शराब खोजते हैं। मैं जो नशे की बोतल ले जा रहा हूँ, सालों को दिखी ही नहीं।'

और रत्ती पहले अपने आप में सिकुड़ गई और फिर मन की सारी पत्तियों को खोलकर कहने लगी, 'देखना, कहीं नशे की बोतल तोड़ न देना! सभी टुकड़े तुम्हारे तलवों में उतर जाएँगे।'

'कहीं डूब मर!'

'मैं तो डूब जाऊँगी, तुम सागर बन जाओ!'

मैं सुन रही थी, हँस रही थी और फिर एक पीड़ा मेरे मन में आई, 'हाय री स्त्री, डूबने के लिए भी तैयार है, यदि तेरा प्रिय एक सागर हो!'

फिर धुलिया आ गया। हम ट्रक में से उतर गए और कुछ मिनट तक एक ख़याल मेरे मन को कुरेदता रहा- यह 'रत्ती' एक अधखिली कली-जैसी लड़की। माणकू इसे पता नहीं कहाँ से तोड़ लाया था। क्या इस कली को वह अपने जीवन में महकने देगा? यह कली कहीं पाँवों में ही तो नहीं मसली जाएगी?

पिछले दिनों दिल्ली में एक घटना हुई थी। एक लड़की को एक मास्टर वायलिन सिखाया करता था और फिर दोनों ने

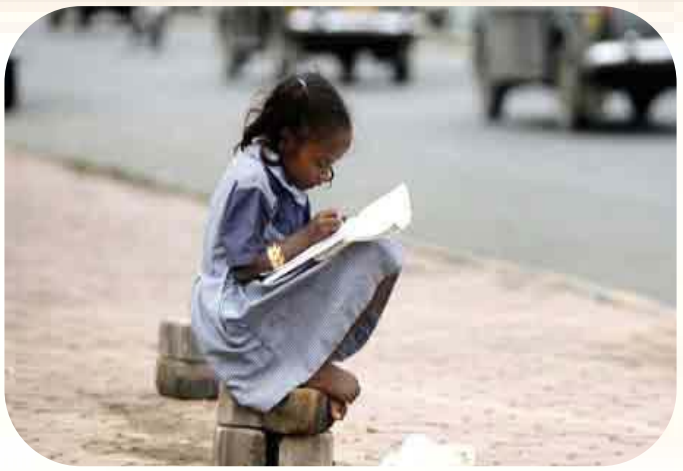

सोचा कि वे बम्बई भाग जाएँ। वहाँ वह गाया करेगी, वह वायलिन बजाया करेगा। रोज़ जब मास्टर आता, वह लड़की अपना एक-आध कपड़ा उसे पकड़ा देती और वह उसे वायलिन के डिब्बे में रखकर ले जाता। इस तरह लगभग महीने-भर में उस लड़की ने कई कपड़े मास्टर के घर भेज दिए और फिर जब वह अपने तीन कपड़ों में घर से निकली, किसी के मन में सन्देह की छाया तक न थी। और फिर उस लड़की का भी वही अंजाम हुआ, जो उससे पहले कई और लड़कियों का हो चुका था और उसके बाद कई और लड़कियों का होना था। वह लड़की बम्बई पहुँचकर कला की मूर्ती नहीं, कला की कब्र बन गई, और मैं सोच रही थी, यह रत्ती यह रत्ती क्या बनेगी?

आज तीन वर्ष बाद मैंने रत्ती को देखा। हँसी के पानी से वह तरकारियों को ताज़ा कर रही थी, 'पालक एक आने गठ्ठी, टमाटर छह आने रत्तल और हरी मिर्चें एक आने ढेरी।' और उसके चेहरे पर पालक की सारी कोमलता, टमाटरों का सारा रंग और हरी मिर्चों की सारी खुशबू पुती हुई थी।

जीवी के मुख पर दु:खों की रेखाएँ थीं - वहीं रेखाएँ, जो मेरे गीतों में थीं और रेखाएँ रेखाओं में मिल गई थीं। रत्ती के मुख पर हँसी की बूँदे थीं- वह हँसी, जब सपने उग आएँ, तो ओस की बूँदों की तरह उन पत्तियों पर पड़ जाती है; और वे सपने मेरे गीतों के तुकान्त बनते थे।

जो सपना जीवी के मन में था, वही सपना रत्ती के मन में था। जीवी का सपना एक उपन्यास के आँसू बन गया और रत्ती का सपना गीतों के तुकान्त तोड़ कर आज उसकी झोली में दूध पी रहा था।

-31 अगस्त, 1919 गुजरांवाला (पंजाब) में जन्मीं अमृता प्रीतम पंजाबी के सबसे लोकप्रिय लेखकों में से एक और पहली कवयित्री माना जाता है। उन्होंने लगभग 100 पुस्तकें लिखी हैं जिनमें उनकी चर्चित आत्मकथा रसीदी टिकट भी शामिल है। अमृता प्रीतम उन साहित्यकारों में थीं जिनकी कृतियों का अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ। अपने अंतिम दिनों में अमृता प्रीतम को भारत का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान पद्मविभूषण और ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से पहले ही अलंकृत किया जा चुका था।

चर्चित कृतियाँ उपन्यास—पांच बरस लंबी सड़क, पिंजर, अदालत, कोरे कागज़, उन्चास दिन, सागर और सीपियां *आत्मकथा*—रसीदी टिकट *कहानी संग्रह*—कहानियाँ जो कहानियाँ नहीं हैं, कहानियों के आँगन में *संस्मरण*—कच्चा आंगन, एक थी सारा।

साभार: www.hindisamay.com

भारतीय विद्या भवन ऑस्ट्रेलिया राजपत्र

भारतीय विद्या भवन (*भवन*) एक गैर लाभ, गैर धार्मिक, गैर राजनीतिक, गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) है| भवन भारतीय परंपराओं को ऊपर उठाये हुए, उसी समय में आधुनिकता और बहुसंस्कृतिवाद की जरूरतों को पूरा करते हुए विश्व के शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है| भवन का आदर्श, '*पूरी दुनिया एक ही परिवार है*' और इसका आदर्श वाक्य: '*महान विचारों को हर दिशा से हमारे पास आने दो*' हैं|

दुनिया भर में भवन के अन्य केन्द्रों की तरह, भवन ऑस्ट्रेलिया अंतर-सांस्कृतिक गतिविधियों की सुविधा प्रदान करता है और भारतीय संस्कृति की सही समझ, बहुसंस्कृतिवाद के लिए एक मंच प्रदान करता है और ऑस्ट्रेलिया में व्यक्तियों, सरकारों और सांस्कृतिक संस्थानों के बीच करीबी सांस्कृतिक संबंधों का पालन करता है|

अपने संविधान से व्युत्पन्न भवन ऑस्ट्रेलिया **राजपत्र** का कार्य है:

- जनता की शिक्षा अग्रिम करना, इनमें हैं:
    1. विश्व की संस्कृतियां (दोनों आध्यात्मिक और लौकिक),
    2. साहित्य, संगीत, नृत्य,
    3. कलाएं,
    4. दुनिया की भाषाएँ,
    5. दुनिया के दर्शनशास्त्र |
- ऑस्ट्रेलिया की बहुसांस्कृतिक समाज के सतत विकास के लिए संस्कृतियों की विविधता के योगदान के बारे में जागरूकता को बढ़ावा|
- समझ और व्यापक रूप से विविध विरासत के ऑस्ट्रेलियाई लोगों की सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय विविधता की स्वीकृति को बढ़ावा|
- भवन की वस्तुओं को बढ़ावा देने या अधिकृत रूप में शिक्षा अग्रिम करने के लिए संस्कृत, अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में पुस्तकों, पत्रिकाओं और नियतकालिक पत्रिकाओं, वृत्तचित्रों को संपादित, प्रकाशित और जारी करना|
- भवन के हित में अनुसंधान अध्ययन का पालन करना और शुरू करना और किसी भी अनुसंधान को जो कि शुरू किया गया है, के परिणाम को मुद्रित और प्रकाशित करना|

www.bhavanaustralia.org

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण

भवन के अस्तित्व के अधिकार का परीक्षण है कि क्या वो जो विभिन्न क्षेत्रों में और विभिन्न स्थानों में इसके लिए काम करते हैं और जो इसके कई संस्थानों में अध्ययन करते हैं, वे अपने व्यक्तिगत जीवन में एक मिशन की भावना विकसित कर सकें, चाहे एक छोटे माप में, जो उन्हें मौलिक मूल्यों का अनुवाद करने में सक्षम बनाएगा|

एक संस्कृति की रचनात्मक जीवन शक्ति इसमें होती है: कि क्या जो इससे सम्बंधित हैं उनमें 'सर्वश्रेष्ठ', हालांकि उनकी संख्या चाहे कितनी कम हो, हमारे चिरयुवा संस्कृति के मौलिक मूल्यों तक जीने में आत्म-पूर्ति पाते हों|

यह एहसास किया जाना चाहिए कि दुनिया का इतिहास उन पुरुषों की एक कहानी है जिन्हें खुद में और अपने मिशन में विश्वास था| जब एक उम्र विश्वास के ऐसे पुरुषों का उत्पादन नहीं करती तो इसकी संस्कृति अपने विलुप्त होने के रास्ते पर है| इसलिए भवन की असली ताकत इसकी अपनी इमारतों या संस्थाओं की संख्या जो यह आयोजित करती है, में इतनी ज्यादा नहीं होगी, ना ही इसकी अपनी संपत्ति की मात्रा और बजट में, और इसकी अपनी बढ़ती प्रकाशन, सांस्कृतिक और शैक्षिक गतिविधियों में भी नहीं होगी| यह इसके मानद और वृत्तिकाग्राही, समर्पित कार्यकर्ताओं के चरित्र, विनम्रता, निस्वार्थता और समर्पित काम में होगी| उस अदृश्य दबाव को केवल जो अकेला मानव प्रकृति को रूपांतरित कर सकता है, को खेल में लाते हुए केवल वे अकेले पुनर्योजी प्रभावों को रिहा कर सकते हैं|

बोधकथा

लेखक का बदला

जमींदार परिवार से ताल्लुक रखने वाले महान रूसी लेखक टॉलस्टॉय की सात वर्षीया बेटी का उसके साथी किसान पुत्र से किसी बात पर झगडा हो गया। क्रोधित होकर किसान-पुत्र ने उसे पीट दिया। आहत लड़की रोती हुई घर पहुंची और लड़के से बदला लेने के लिए पिता से चाबुक माँगा। पिता ने कारण जान लेने के बाद बेटी को समझाया, "उस लड़के को मारने पर उलटे तुझे कष्ट ही होगा।"

परन्तु लड़की ज़िद पर अड़ी रही कि वह उसे सज़ा अवश्य देगी। पिता ने फिर समझाया, "अरे छोड़ो भी, लड़के को क्रोध आ गया होगा। अगर उसे सजा दी गयी तो वह सदा के लिए हमारा शत्रु हो जायेगा।

हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि वह अपने किये पर पश्चाताप करे और हमसे सदैव मधुर सम्बंध बनाये रखे।" इतना कहकर टॉलस्टॉय ने बेटी को एक गिलास शरबत लाकर दिया और कहा, "ये गिलास उसे दे आओ"। लड़की ने अनमने भाव से शरबत का गिलास पकड़ लिया और जाकर उस लड़के को दे दिया। लड़का शरबत पाकर चकित हो गया और टॉलस्टॉय परिवार का भक्त बन गया।

-डॉ रश्मि शील

साभार: नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट, दिसम्बर 2012

अच्छे काम का पुरस्कार

एक बूढ़ा रास्ते से कठिनता से चला जा रहा था। उस समय हवा बड़े जोरों से चल रही थी। अचानक उस बूढ़े की टोपी हवा से उड़ गई।

उसके पास होकर दो लड़के स्कूल जा रहे थे। उनसे बूढ़े ने कहा- मेरी टोपी उड़ गई है, उसे पकड़ो। नहीं तो मैं बिना टोपी का हो जाऊंगा।

वे लड़के उसकी बात पर ध्यान न देकर टोपी के उड़ने का मजा लेते हुए हंसने लगे। इतने में लीला नाम की एक लड़की, जो स्कूल में पढ़ती थी, उसी रास्ते पर आ पहुंची।

उसने तुरंत ही दौड़कर वह टोपी पकड़ ली और अपने कपड़े से धूल झाड़कर तथा पोंछकर उस बूढ़े को दे दी। उसके बाद वे सब लड़के स्कूल चले गए।

गुरुजी ने टोपी वाली यह घटना स्कूल की खिड़की से देखी थी। इसलिए पढ़ाई के बाद उन्होंने सब विद्यार्थियों के सामने वह टोपी वाली बात कही और लीला के काम की प्रशंसा की तथा उन दोनों लड़कों के व्यवहार पर उन्हें बहुत धिक्कारा।

इसके बाद गुरुजी ने अपने पास से एक सुंदर चित्रों की पुस्तक उस छोटी लड़की को भेंट दी और उस पर इस प्रकार लिख दिया- लीला बहन को उसके अच्छे काम के लिए गुरुजी की ओर से यह पुस्तक भेंट की गई है। जो लड़के गरीब की टोपी उड़ती देखकर हंसे थे, वे इस घटना का देखकर बहुत लज्जित और दुखी हुए।

शिक्षा: यह कहानी हमें शिक्षा देती है कि हमें कभी भी किसी का मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। साथ ही हमें हर जरूरतमंद व्यक्ति की हमेशा मदद करनी चाहिए चाहे वो छोटा हो या बड़ा।

साभार: http://hindi.webdunia.com/

पाठक कहते हैं

हम नए कवियों / लेखकों से उनके लेखों / काव्य रचनाओं के नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में पर्काशन हेतु योगदान की अपेक्षा करते हुए आमंत्रित करते हैं। सभी लेख / काव्य रचनाएँ नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में निशुल्क पर्काशित होंगी।

-संपादक मंडल, नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट

हमें भवन ऑस्ट्रेलिया की ईमारत निर्माण परियोजना के लिए आर्थिक सहायता की तलाश है।

कृपया उदारता से दान दें।

नोट: हम अपने पाठकों की स्पष्टवादी, सरल राय आमंत्रित करते हैं।

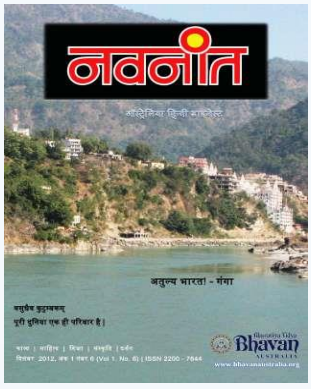

हमारे साथ विज्ञापन दें!

नवनीत ऑस्ट्रेलिया हिन्दी डाइजेस्ट में विज्ञापन देना आपकी कंपनी के ब्रांड के लिए सबसे अच्छा अवसर प्रदान करता है और यह आपके उत्पादों और / या सेवाओं का एक सांस्कृतिक और नैतिक संपादकीय वातावरण में प्रदर्शन करता है।

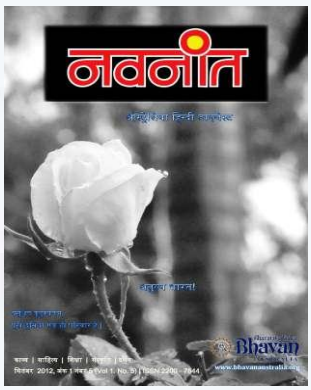

भवन ऑस्ट्रेलिया भारतीय परंपराओं को ऊँचा रखने और उसी समय बहुसंस्कृतिवाद एकीकरण को प्रोत्साहित करने का मंच है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें : info@bhavanaustralia.org

महात्मा गाँधी कहते हैं

निर्मल चरित्र एवं आत्मिक पवित्रता वाला व्यक्तित्व सहजता से लोगों का विश्वास अर्जित करता है और स्वत : अपने आस पास के वातावरण को शुद्ध कर देता है। हजारों लोगों द्वारा कुछ सैकडों की हत्या करना बहादुरी नहीं है। यह कायरता से भी बदतर है। यह किसी भी राष्ट्रवाद और धर्म के विरुद्ध है।

बुद्ध ने अपने समस्त भौतिक सुखों का त्याग किया क्योंकि वे संपूर्ण विश्व के साथ यह खुशी बांटना चाहते थे जो मात्र सत्य की खोज में कष्ट भोगने तथा बलिदान देने वालों को ही प्राप्त होती है।

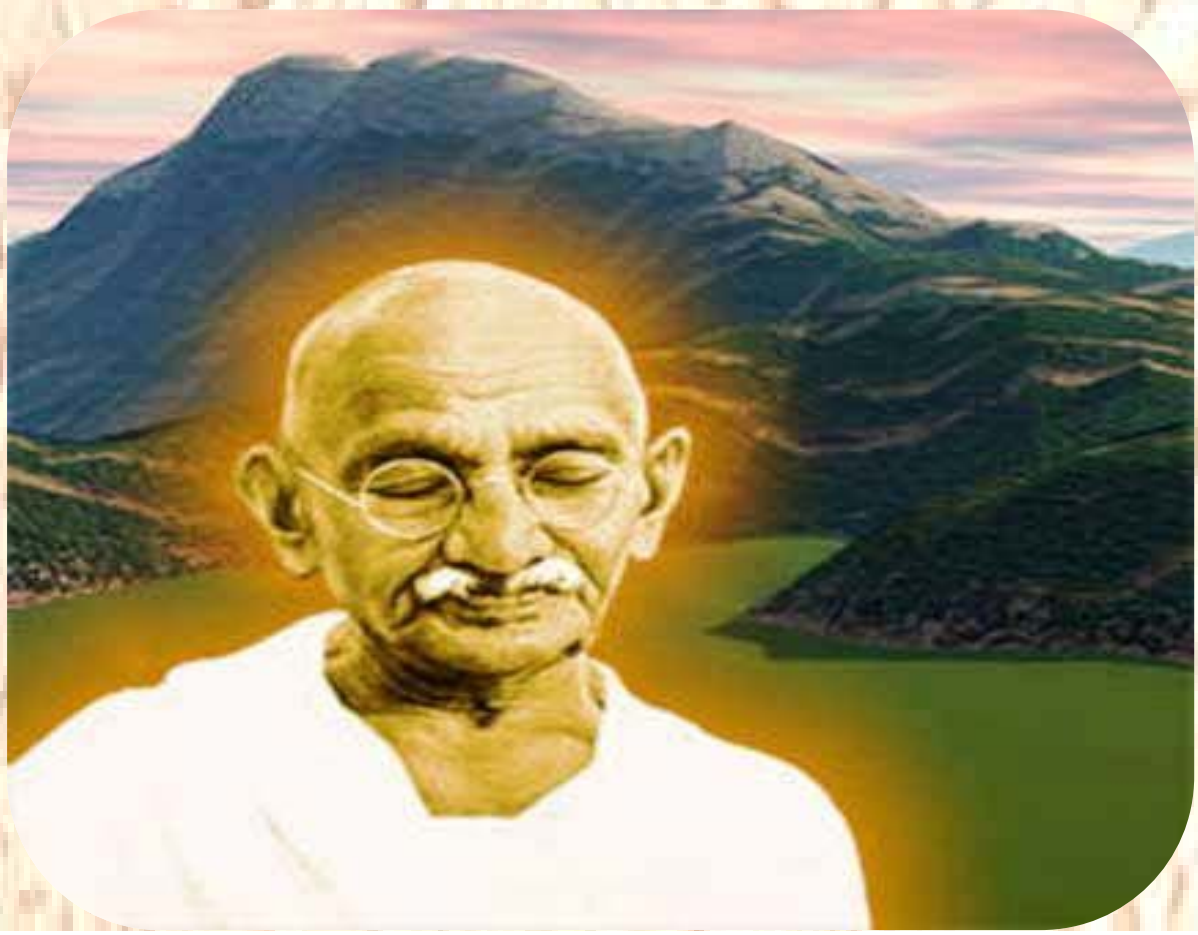

taxation & business guru

Taxation Guru - using their knowledge and expertise to stay ahead of the every changing taxation legislation.

Whether you're a company, partnership, trust or sole trader, you need help with Super, Salary packages, Fringe benefits, Investments and deductions.

Call the Taxation Guru, the power to help you make the right decisions.

We endeavour to take the burden off your shoulders and make life easy by providing a broad range of tax related services.

Contact us at:
Suite 100, Level 4, 515 Kent Street, Sydney 2000
t: 1300 GURU4U (487848) & +612 9267 9255
e: gambhir@bmgw.com www.taxationguru.com.au

THE TAX INSTITUTE

CHARTERED TAX ADVISER

BMG GROUP

www.taxationguru.com.au